R.N.I. No. 25078/72 S.S.P./L.W.N.P./265/02/2006-08 Mo. : 9935213686

40 सालों में पसमांदा मंसूरी समाज की दबी और कमजोर आवाज़ को फर्श से अर्श की बुलंदियों पर पहुँचाने वाला अलमबरदार

मंसूरी पैग़ाम

सुल्तान टीपू

मूल्य रु0 10/- E.mail.: mansooripaigham@yahoo.in लखनऊ 21

बहुजन समाज पार्टी का लखनऊ कार्यकर्ता महाधिवेशन

अनीस मंसूरी

जयपुर मंसूरी समाज के 111 जोड़ों की इज़्तिमाई शादी में

जयपुर शादी सम्मेलन में मंसूरी पैगाम का स्टाल मौलाना इलियास मंसूरी की देखरेख में व तंजीम की तरफ से दिया गया ज़हेज़

शादी सम्मेलन में शिरकत करते हुए ख़्वातीन

Scanned with OKEN Scanner

S.S.P/L.W.N.P/265/02/2006-08 R.N.I. No. 25078/72

मंसूरी पैग़ाम

लखनऊ 21

17 साल, 32 हिस्सा, 28 अगस्त 08

मेम्बर साज़ी

एक साल	150 /=
तीन साल	300 /=
लाईफ मेम्बर	1500 /=
सरपरस्त	5100 /=

एक नज़र में

फोटो हवाला, जयपुर	– 2
वह दिन दूर नहीं	– 4
शक्ति प्रदर्शन	– 5
इज्तिमाई शादियाँ	– 7
आँखों में रोशनी	– 9
अलग से रिंजर्वेशन	– 10
फोटो हवाला कानपुर	– 11
महोबा कान्फ्रेंस	– 13
सियासी पार्टियों में हलचल	– 15
सियासी पहचान	– 17
दलित मुस्लिम कयादत	– 19
गमगीन खबरें	– 20
इस्लाहे मआसरा	– 21
जिला इजलास	– 24
नज़्म इज्तिमाई शादी	– 33
अपनी ताकत पहचानो	– 34
रिश्तों की जानकारी	– 36
न्योतनी उन्नाव फोटोग्राफ	–10,29,30

खानदाने मंसूरी पैग़ाम

बानिये तंजीम

आली जनाब मुनीर बख्श मंसूरी जालौनवी

सरपरस्त शोर-ए-इम्त्याजी

आली जनाब कलीमुद्दीन शम्स, कलकत्ता

आली जनाब एच0 इब्राहीम, कर्नाटक

सरपरस्त

जनाब के. नूर मोहम्मद मंसूरी, अनन्तपुर, A.P.

जनाब गुल मोहम्मद मंसूरी, जयपुर

जनाब वकील अहमद मंसूरी, लखनऊ

जनाब हाजी रवीउल्ला मंसूरी, कानपुर

जनाब शेख मो0 रफीक मंसूरी पार्षद, मुम्बई

जनाब हाजी मो0 तय्यब मंसूरी, मुम्बई

जनाब अब्दुल हसन मंसूरी (मामू), दिल्ली

जनाब ए. जलील मंसूरी, मुम्बई

प्रधान सम्पादक-

हाजी नबी बख्श मंसूरी M- 9935213686

आफिस नामानिगार-

आफताब आलम मंसूरी M- 9839829019

email : mansooripaigam@yahoo.in

farhansss@rediffmail.com

Seraj Ahmad Mansoori

(Optician)

Mo.: 9415840598

CHASMA POINT

Lens Eye Testing

-: Available Lenses :-

+ High Index, + English White, + U.V. White, + Resilens All Colour, + Photocromic All Colour, + Tinted Glass of all Colour, + Bifoeal-Executive, + Kryklock, + Progressive

66 Takia Road, Paharpur, Azamgarh

वह दिन दूर नहीं जब ?

चार बार वजीर-ए-आला बनने वाली सुश्री मायावती वजीर-ए-आज़म क्यों नहीं बन सकती, अनहोनी होने से पहले ही वारिस चुना, आमदनी से ज्यादा सम्पत्ति का खौफ, नटवर सिंह, साहिद सिद्दीकी और वघेला पार्टी में शामिल।

लखनऊ- बहुजन समाज पार्टी की सदर व उ0प्र0 की वजीर-ए-आला सुश्री मायावती नें पार्टी के कौमी कन्वेंशन के मौके पर रमाबाई अम्बेडकर मैदान में बड़ी तादाद में जमा हुए अपने हमदर्दों के बीच अपनी राह में रूकावट पैदा करने वाले लोगों से सवाल किया कि मैं चार बार वजीर-ए-आला बन सकती हूँ तो मुल्क की वजीर-ए-आज़म क्यों नहीं बन सकती।

वजीर-ए-आला ने अपने वजीर-ए-आजम बनने में अंदेशा भी जाहिर किया कि मुखालिफ पार्टियां इन्हें रोकने के लिये मरवा भी सकती हैं। आपने आगे कहा कि कांग्रेस व भारतीय जनता पार्टी किसी खातून को मुल्क का वजीर-ए-आजम बनता नहीं देख सकती इसलिए इनकी जिन्दगी को और खतरा है।

लाहक खतरे का जिक्र करते हुए कार्यकर्ताओं से कहा कि किसी भी नाखुशगवार वाक्ये के लिए तैयार रहने और मरकज़ पर हुकूमत करने के लिए पार्टी पीछे न रहे। इसी मौके पर आप अपने वारिस का जिक्र करने से भी नहीं चूकीं लेकिन नाम का खुलासा नहीं किया। सिर्फ इतना जरूर कहा कि उसकी मां दलित और गरीब है। मेरी पैदाइश एक दलित के घर हुई थी इसलिए मैं एक दलित की बेटी हूँ मुझे इस बात का फख है।

आपने कहा कि लोकसभा के चुनाव करीब आ रहे हैं, अगर चुनाव से पहले या बाद में कांग्रेस पार्टी हम पर फर्जी आमदनी से ज्यादा सम्पत्ति का मुकदमा कायम करके जेल भेज देती है और हमारा कत्ल हो जाता है तो पार्टी कार्यकर्ता सूत समेत इंतिकाम लेंगे।

अपनी सरकार की कामयाबियों का जिक्र करते हुए कहा कि 80 हजार प्राईमरी स्कूल टीचर व 6 हजार उर्दू टीचरों को सरकारी नौकरी दी गयी है। आपने कहा कि इकतसादी तौर से पसमांदा मुसलमानों को 1995 में हमने रिजर्वेशन दिया था, अब आला जाति के गरीबों को भी रिजर्वेशन देने के लिए मरकज़ को खत लिखा है।

कांग्रेस और भाजपा दोनों ही मनुवादी नजरिया की पैरोकार हैं। ये इस बात को कतई बर्दास्त नहीं करेंगी कि कोई दलित खातून मुल्क की वजीर-ए-आजम बने। ये हमारी सियासत का इंतिहाई अफसोसनाक पहलू है। पार्टी कारकुन से मुल्क से इकतिदार आला पर काबिज़ होने के लिए जद्दोजेहद करने की अपील की और कहा कि अब वो दिन दूर नहीं कि कोई भी रूकावट बी.एस.पी. के रहनुमा को मुल्क का वजीर-ए-आजम बनने से रोक सके। आगे आने वाले चुनाव के लिए आज से ही तैयारियां करने की अपील करते हुए मुल्कगीर तहरीक चलाने का ऐलान किया।

लोकसभा चुनाव में पार्टी किसी से भी समझौता नहीं करेगी। उ.प्र. की सभी 80 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। पूर्व केन्द्रीय मंत्री नटवर सिंह, सांसद बघेला और साहिद सिद्दीकी बसपा में शामिल हो गये हैं।

शक्ति प्रदर्शन के लिए लब्बैक की सदाऐं

मंसूरी समाज जल्द ही लखनऊ की सड़कों पर शक्ति प्रदर्शन करेगा। मनुवादियों नें तमाम पार्टियों के लिए वोट लेकर मंसूरी समाज को दिशाहीन बनाया। दीन में दो मुंही बात, रोटी और बेटी में फर्क कैसा। चार प्रतिशत वाले हुकूमत करें, ग्यारह प्रतिशत वाले ठोकरें खायें- *अनीस मंसूरी*

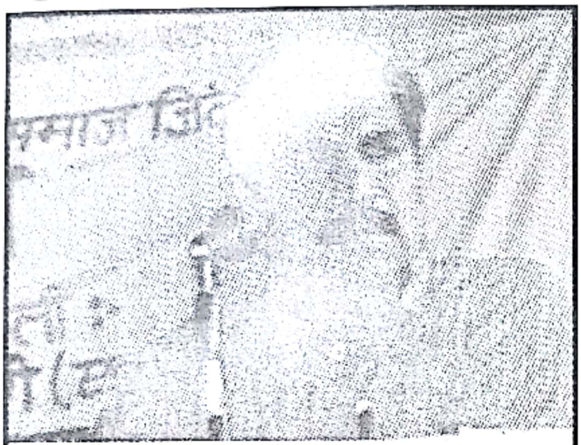

जनाब अनीस मंसूरी खिताब करते हुए

मिलक, रामपुर उ0प्र0 20 जुलाई 08- मंसूरी पैगाम नामानिगार जनाब डा. मोहम्मद जान मंसूरी से मिली जानकारी के तहत आल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी का एक रोजा जिला सम्मेलन आली जनाब हाजी रमजान मंसूरी की सरपरस्ती, जनाब इरशाद मंसूरी मण्डल सदर की निज़ामत और जनाब डा. फाजिल मंसूरी की सदारत में रंगोली मण्डप में मुनक्किद हुआ। जलसे की शुरूआत तिलाव-ए-कुरआन व नातपाक से हुई।

जलसे के महमान-ए-खुसूसी आली जनाब अनीस मंसूरी सदर **A.I.J.M.S.** लखनऊ ने अवाम को खिताब करते हुए कहा कि तंजीमी काम लगभग 60 साल से चल रहा है लेकिन मंसूरी समाज आज तक अपनी मंजिल नहीं पा सका क्योंकि ये सभी राजनीतिक दलों और आपने रहबरों के जरिये ठगा जाता रहा है। इसलिए अपनी मंजिल भूल बैठा है और अब ऐसे चौराहे पर खड़ा है जहां इसे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा है। हमारी आबादी लगभग 11-12 प्रतिशत है लेकिन दिशाहीन होने की वजह से हमारी दुरदशा हो रही है, जबकि उ.प्र. में यादव आबादी 4 प्रतिशत है और हुकूमत बनाने में कामयाब रही, क्योंकि इसने अपना एक लीडर मान लिया है। आपने आगे कहा कि मंसूरी समाज की कामयाबी के लिए जरूरी है कि हम एक लीडर, एक परचम और एक पार्टी की सियासत करें तो हमारी मंजिल आसान होगी। मंसूरी समाज जहां तमाम सियासी दलों के लिए मनुवादी मुस्लिम लीडरों के इशारों पर वोट बैंक बन कर रहा और सिर्फ इस लिए कि इन्हें हमेशा चुनाव के वक्त बताया जाता है कि "एक ही सफ में खड़े हो गये मेहमूद-ओ-अयाज़....." लेकिन धोखा देने वालों के अन्दर का पापी मन न हमें सियासत के कुछ दिला सका और न मज़हब के नाम पर दीन-दारी, ये कैसी दीनदारी है जहां मुसलमानों का कौल और फेल अलग-अलग हो। रोटी के नाम पर हम सब एक हैं लेकिन बेटी के नाम पर फकीर, जुलाहा, धुना, कुंजड़ा और कसाई में फर्क कैसा। हकीकत में चन्द मनुवादी मुसलमानों नें दीन में ऐसी दरार पैदा किये कि जिनकी भरपाई आसान नहीं है। अगर हमें इनसे निजात हासिल करनी है तो हमें अपनी सामाजिक पहचान मंसूरी और इल्म का सहारा

फूलों के हार में लिपटे सदर के साथ जिम्मेदार हज़रात

लेना होगा तभी हमारी मंजिल आसान होगी।

पूरे मुल्क की आबादी लगभग 7 करोड़ का जिक्र करते हुए मंसूरी साहब ने बताया कि पश्चिमी उ.प्र. में बिरादरी के हालात मआसी तौर पर बेहतर हैं, लेकिन पूर्वी इलाके में गरीबी और बेरोजगारी के अंधेरों में समाज भटक रहा है। जरूरत है हमें अपने लीडर की आवाज पर लब्बैक कहने की और इच्छाओं के दमन करने की। इस सबक को पढ़ने के लिए हमें बी.एस.पी. और पसमादा समाज की बीस साला कुर्बानी को सामने रखना होगा। हम जल्द ही शक्ति प्रदर्शन लखनऊ की तैयारी में हैं, ताकि जिन्दा कौमों की फहरिस्त में हमें भी गिना जाये। इस मौके पर आये हुए जनसैलाब में कौमी बेदारी के लिए जनाब अनीस मंसूरी की आवाज पर हाथ उठाकर लब्बैक के नारे बुलन्द किये। आपने आगे कहा कि बी.एस.पी. नें मंसूरी समाज को मुस्लिम समाज से अलग हट कर एक पहचान दी है। मंसूरी समाज उ.प्र. के लिए मुझे कॉर्डीनेटर बनाया जिससे हमारी पहचान सियासत के गलियारों तक पहुँची। हमारे अपने लोगों ने अपनी सामाजिक पहचान छिपा कर महोबा के मुबीना काण्ड में आबरूरेज़ी से लेकर जिस्म के टुकड़े-टुकड़े करने व आजमगढ़ के इमरान मंसूरी को सरेआम गोलियों से भूंनडालने वालों के हौसले बुलंद किये हैं।

तालीम की कमी नें समाज में तमाम गैरजरूरी और बेजा रस्मो-रिवाज को पनाह दी है। हम फिजूल खर्चियों में घिर कर गरीब से गरीबतर होते चले गये। जनाब अनीस मंसूरी साहब की कोशिशों का नतीजा है कि इज्तिमाई शादियों की राह में हमने कदम बढ़ाये हैं, जिसमें कम खर्च और बचे हुए पैसों से रोजगार और बच्चों को अच्छी तालीम दिलाने का मौका मिला। आपकी सामाजिक शोहरत का यह हाल है कि जयपुर राजस्थान में मंसूरी साहब की सदारत में 111 जोड़ों का निकाह मुनक्किद हुआ। जिसकी गूँज पूरे मुल्क में फैली।

जलसे को खिताब करने वालों में जनाब हाजी फुरकान मंसूरी, सरताज मंसूरी मण्डल सदर बरेली, हाजी अंजुम अली मंसूरी जनरल सेक्रेट्री।

सदर का काफिला लखनऊ से 19 जुलाई को चलकर रात 10 बजे होटल मोतीमहल बरेली पहुँचा, जहां तंजीम के ओहदेदारान ने गर्मजोशी से आपका इस्तकबाल किया। सुबह 10 बजे शहर से तमाम गाड़ियों ने एक बड़े काफिले की शक्ल अख्तियार कर ली। काफिले का पहला इस्तकबाल बाकरगंज पुलिस चौकी मोहल्ला में किया गया, जहां गुलपोशी और बुलंद आवाज में मंसूरी समाज जिन्दाबाद/अनीस मंसूरी के नारों ने पूरे माहौल को मंसूरीमय बना दिया। दूसरा इस्तकबाल स्वाले नगर (महेशपुरा) में हुआ, जहां से बड़ी तादाद में लोग अपने-अपने वाहनों के साथ काफिले में शामिल हो लिये, यहां नौजवानों का जोश और बलबला देखने लायक था, ऐसा लग रहा था जैसे आज से पहले इस कौम को कभी इस तरह की खुशियां मयस्सर नहीं हुईं। तीसरा इस्तकबाल फतेहगंज पश्चिमी जनाब इब्राहीम मंसूरी की सरपरस्ती में हुआ, चौराहे पर थोड़ी देर के लिए ऐसा लगा जैसे सारे शहर का हुजूम यहीं पर मंसूरी समाज के इस्तकबाल में खुशियों को दोबाला कर रहा हो। जल्सागाह मिलक रामपुर के एक कि.मी. पहले ही से सदर को रोडमार्च के लिए गाड़ी से उतार लिया गया। हजारों लोगों ने मार्चपास में साथ दिया और आसमान को छू लेने वाली सदाओं नें इस्तकबाल किया। जलसागाह में आये हुए मेहमानों का गुलपोशी और अमामां बांध कर इस्तकबाल किया गया। मेहमान-ए-खुसूसी जनाब अनीस मंसूरी साहब को अमामां बांध कर, साल उढ़ा कर और मोमेन्टो (प्रतीक चिन्ह) देकर इस्तकबाल किया गया। इस जलसे और जुलूस की रहबरी जनाब अंजुम मंसूरी, अबरार मंसूरी जिला सदर, असगर मंसूरी, साबिर मंसूरी, इकबाल मंसूरी, अशफाक मंसूरी, चन्दा मंसूरी, हाजी फुरकान मंसूरी और जनाब हैदर मंसूरी नें की।

Abdul Muyeej Mansoori
King
MILK & ELAICHI RUSK
A.W. BAKERS
Bara Bazar, Bareilly

जयपुर में इज्तिमाई शादियाँ

मध्य प्रदेश व राजस्थान इज्तिमाई शादियों के लिए अपनी पहचान बना चुके हैं। सिर्फ शहरों में ही नहीं बल्कि देहातों में भी दर्जनों इज्तिमाई शादी प्रोग्राम मुनक्दिद हो रही हैं। जिससे फिजूल खर्ची और वेजा रस्मोरिवाज पर पावंदी लगी है। बच्चों में अच्छी तालीम का आमरिवाज बना है। उत्तर प्रदेश में अनीस मंसूरी की रहबरी में इज्तिमाई शादियों का सिलसिला शुरू।

बायें से अंजुम अली मंसूरी, अनीस मंसूरी, नसीम मंसूरी, इंजीनियर चाँद मोहम्मद मंसूरी

जयपुर राज0- शेर-ए-उत्तर प्रदेश आली जनाब अनीस मंसूरी लखनऊ की जेरे सदारत 111 जोड़ों का निकाह कर्बला मैदान में मुनक्किद हुआ। मेहमान-ए-खुसूसी आली जनाब आर0पी0 सिंह आई. जी. रेलवे, जनाब अशोक कुमार परमार महापौर, जनाब गुल मोहम्म्द मंसूरी पूर्व विधायक जयपुर, जनाब जसवीर सिंह अल्पसंख्यक सदर, जनाब अंजुम अली एडवोकेट बरेली, सरताज मंसूरी शाहजाहाँपुर और जनाब बिहारी लाल भार्गव सांसद थे। जलसे की निज़ातम जनाब अब्दुल कासिम साहब नें की। यह जलसा मकामी तंज़ीम मंसूरी पंचायत संस्थान जयपुर के ज़ेरे निगरानी मुनक्किद हुआ। जिसकी रहबरी जनाब अब्दुल लतीफ़ मंसूरी आरको कर रहे थे।

जलसे की शुरूआत तिलावत-ए-कुरआन से शुरू हुई, गुलपोशी के जरिये तमाम आये हुए मेहमानों का इस्तकबाल किया गया। आल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी उ0प्र0 के सदर जनाब अनीस मंसूरी नें अवाम को खिताब करते हुए कहा कि मुझे आज बड़ी खुशी हो रही है कि आपने मुझे जो मंसब अता किया इसके लिए मैं आप सब का बहुत शुक्र गुज़ार हूँ। तंजीमी कार्यकरदगी पर रोशनी डालते हुए आपने कहा कि तंज़ीमी काम लगभग 60 साल से चल रहा है, लेकिन इसकी चाल कछुए की तरह रही और यह बड़े शहरों तक ही महदूद रहा। हमनें उत्तर प्रदेश में काम की शुरूआत देहाती क्षेत्र से की है जहां लोग तंजीम के बारे में कुछ जानते ही नहीं थे। इस काम में नौजवानों ने

अनीस मंसूरी खिताब करते हुए

हमारा साथ दिया। मैं अपने साथियों का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ, मैं यह उम्मीद करता हूँ कि राजस्थान में भी इस काम की बागडोर नौजवान ही सम्भालेंगे। मंसूरी समाज में बेदारी की कमी की वजह से हम सियासत से दूर रहे हैं जिससे हमारी तरक्की रूकी है। हमारा समाज बदहाली के अंधेरों में भटकता रहा। मंसूरी बिरादरी सिर्फ सियासी पार्टियों के लिए वोट बैंक बन कर रह गई। हमारे वोट से पूरे मुल्क में सरकारें बनीं लेकिन कहीं भी इस वोट को गिना नहीं गया, अब जरूरत है सियासत में अपने समाज की पहचान बनाने की। अगर हम इज्तिमाई तौर से किसी एक पार्टी के हो जायें तो यकीनन हम समाज के लिए कुछ पा सकते हैं। आपने आगे कहा कि मंसूरी बिरादरी एक वफादार और खुद्दार कौम है, तवारीख में कहीं भी इस समाज पर धोखा व गद्दारी का इल्ज़ाम कभी नहीं लगा। हम तालीमी व आर्थिक कमजोरी की वजह से पसमादा हैं, हमारा पेशा रूई व तेल का है जिसे आज मशीनों ने ले लिया है। सियासत में हमारी पहचान के लिए मनुवादी मुसलमान जिन्होंने तमाम सियासी पार्टियों पर अपना कब्ज़ा जमा लिया है, उनके बीच कोई पसमादा मुसलमान घुस ही नहीं पा रहा है। पूरे मुल्क में हमारी आबादी लगभग सात करोड़ है, फिर भी प्रजातंत्र में हम पसमादा क्यों, उसकी वजह ये है कि मंसूरी समाज में आपसी बिखराव ज्यादा है। लोग अलग-अलग नामों और कामों से पहचाने जाते हैं। अकेले जयपुर में ही मंसूरियों के 53 गोत्र हैं। अब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि पूरे मुल्क में हालात क्या होंगे। प्रजातंत्र के इस दौर में जब लोगों के सर गिने जाते हैं, हम कामयाब नहीं हुए तो हम किस वक्त का इंतिजार कर रहे हैं। हम जगह-जगह मीटिगें करके लोगों में बेदारी पैदा कर रहे हैं। हम किसी के आगे हाथ नहीं फैलायेंगे, हम एक मजबूत कौम बनकर हक छीनने की ताकत पैदा कर रहे हैं और यह तभी मुमकिन होगा जब हम एक प्लेटफार्म पर एक साथ खड़े हों। समाज को एक नाम मंसूरी के प्रचार व प्रसार की बहुत जरूरत है। एक परचम जो चार सफेद और पांच नीली पट्टियों का साथ लेकर चलना होगा।

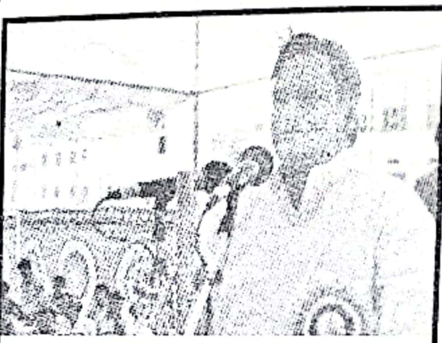

गुल मो. मंसूरी खिताब करते हुए

अब्दुल लतीफ आर्को खिताब करते हुए

16 सूत्री मांग-पत्र जो उ.प्र. सरकार के सामने पेश किया

1. मंसूरी बिरादरी को अतिपिछड़ी जाति के कालम में शामिल करने की मांग की।
2. समस्त सरकारी-अर्धसरकारी सेवाओं में 9 प्रतिशत नौकरियों में आरक्षण की मांग की।
3. अनुसूचित जाति के बराबर हुकूक दिये जाने की मांग।
4. विधानसभा में आबादी के हिसाब से नुमाइन्दगी दिये जाने की मांग की।
5. आफिस के लिए भूमि, भवन की जरूरत पूरी की जाने की मांग की।
7. तमाम आयोगों में मंसूरी बिरादरी के सदस्य नामित किये जाने की मांग की।
8. केन्द्रीय, सरकारी और अर्धसरकारी समितियों में प्रतिनिधित्व दिये जाने की मांग की।
9. तालिबइल्मों को कालेज व हॉस्टल में आरक्षण दिये जाने की मांग की।
10. कालेजों की स्थापना के लिए हर जिले में ज़मीन आवंटन हेतु अधिकार की मांग।

बाकी पेज 21 पर

गुदड़ी के लाल

अंधों की आँखों में रोशनी लाने वाले

डा0 अरशद मंसूरी

डा0 अरशद मंसूरी एक ऐसा नाम जिसनें पिछले पांच सालों में सैकड़ों लोगों की जिन्दगी में नेत्रदान में मिली आँखों की पुतली को प्रत्यारोपित करके गरीब और बेसहारा लोगों में नई उमंग लाने का काम किया है। **"मंसूरी ग्रुप ऑफ सोशल वर्क्स"** के नाम से स्वयं सेवी संगठन की पहचान कराई है। डा0 मंसूरी भारत के पहले मुस्लिम नेत्रदानी और देहदानी हैं। सन् 2005 में खेल मंत्रालय द्वारा प्रदत्त इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एन.एस.एस. पुरस्कार में आप नामित युवा हैं।

डा0 अरशद मंसूरी कस्बा कायमगंज, जिला- फर्रूखाबाद के रहने वाले हैं। आपकी उम्र लगभग 22 साल है। आपके वालिद मोहतरम जनाब अल्लादीन मंसूरी फर्रूखाबाद एवं कन्नौज में पोस्ट मास्टर के पद पर राजपत्रित अधिकारी रहे हैं, और बड़े भाई जनाब आसिफ मंसूरी शाही इण्टर कालेज के प्रबन्धक हैं। डा0 मंसूरी की एक तमन्ना है कि भारत में एक करोड़ बीस लाख नेत्रहीनों की आंखों में उजाला भर दूँ।

इंसान के मरने के बाद या पूर्व अपने नेत्रदान करें, आस-पास के लोगों, रिश्तेदारों, दोस्तों को भी नेत्रदान करने के लिए प्रेरित करें। मरने के छः घंटे बाद तक ऑखे जिन्दा रहती हैं। आपके जरिये दी गई आँखें किन्हीं दो बगैर आँखों वालों को नई जिन्दगी दे सकती हैं।

सभी मज़हबों नें नेत्रदान का समर्थन किया है और इसको इंसानियत के लिए किया गया सबसे कीमती खैरात (दान) मानते हैं। हिन्दुस्तान दैनिक कानपुर, शनिवार 26 जनवरी 08 के मुताबिक नेत्रदान करने वालों में मुस्लिम समुदाय में अभी भी झिझक है, ये सोचते हैं कि मजहबी तौर पर आँखें खैरात करना ठीक नहीं है मगर अरब में फतवा देने वाली सर्वोच्च संस्था नें इसकी मान्यता दे दी है। अब इसका प्रचार-प्रसार करने की जरूरत है।

नोट : आई बैंक की टीम को नेत्रदान लेने के लिए कहीं भी बुलाया जा सकता है, सिर्फ आँख की पुतली निकाली जाती है और उसकी जगह नकली पुतली लगा दी जाती है जिससे चेहरा खराब न लगे। पुतली खरीदना और बेचना कानूनन जुर्म है। आँख के दान देने और लेने की कोई फीस नहीं है।

मोबाइल : 09956810884

गुदड़ी में लाल ढूंढ़िये

बिरादराने मंसूर को जिन पर नाज़ है इस उनमान के तहत इदारा मंसूरी पैग़ाम लखनऊ उन हज़रात का मुकम्मल गायबाना तआरूफ कराता है जो समाज और बिरादरी में एक नमूना हैं, और जिन्होंने अपने लिए समाज और मुल्क के लिए कोई नुमाया काम किया है, चाहे वह तालीमी क्षेत्र में अच्छे नम्बरों से पास हुए हों या फिर और किसी भी क्षेत्र में। तफसीली हवाला भेजें ताकि उनके कारनामों से समाज में बेदारी पैदा की जा सके और इन सब को सम्मानित किया जा सके।

मंसूरी समाज के लिए अलग से 7.5 प्रतिशत रिजर्वेशन की मांग

मुस्लिम आबादी के हिसाब से रिजर्वेशन दिया जाये, गरीब बच्चें की तालीम के लिए मदद, इज्तिमाई शादियों पर गौरोफिक्र, सामाजिक और सियासी कामों में हिस्सा लेकर मंसूरी समाज अपनी पहचान बनाये।

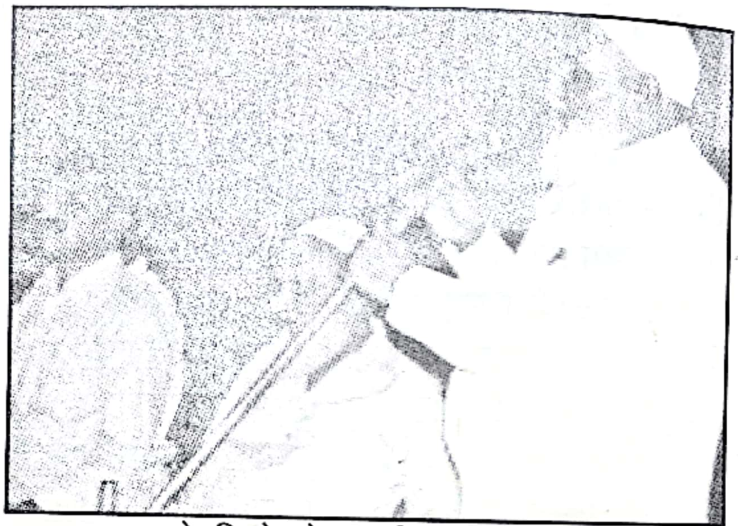

कानपुर- आफिस नामानिगार मंसूरी आफताब से मिली जानकारी के तहत, तिलावत-ए-कुरआन के बाद ऑल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी उ.प्र. का कार्यकर्ता सम्मेलन लाईवा मैरिज लॉन, जाजमऊ में जनाब हाजी हबीबुर्ररहमान की सदारत में मुनक्किद हुआ। मेहमान-ए-खुसूसी जनाब अनीस मंसूरी सदर उ.प्र. का इस्तकबाल करते हुए जनाब हाजी जफर मंसूरी नें कहा कि छोटे-छोटे सम्मेलन करके हम पूरी प्रदेश में बिरादरी को बेदार कर रहे हैं। जनाब शब्बीर मंसूरी ने कार्यकताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि अब कानपुर की सरजमी पर भी बिरादरी का रंग दिखने लगा है। हमें ज्यादा से ज्यादा तादाद में सोसाइटी के सदस्य बनाकर तंजीम को आगे बढ़ाना है। उपाध्यक्ष जनाब हाजी शाकिर मंसूरी नें कहा कि हम एकजुट होकर आगे बढ़ सकते हैं, हमें अगले माह में बिरादरी का एक मण्डलीय सम्मेलन करना है, उसकी तैयारी में हम पूरे मण्डल का दौरा कर रहे हैं।

आखिर में मेहमान-ए-खुसूसी शेर-ए-उत्तर प्रदेश जनाब अनीस मंसूरी ने अवाम को खिताब करते हुए कहा कि प्रदेश में हमारी तादाद एक करोड़ पैंसठ लाख है। आबादी के हिसाब से हमारी मांग है कि मंसूरी समाज को अलग से 7.5 प्रतिशत का आरक्षण मिलना चाहिए। तालीम पर जोर देते हुए जनाब मंसूरी साहब ने कहा कि बिरादरी के हर बच्चे को इस शिक्षा सत्र में स्कूल जाना होगा। अगर किसी को आर्थिक मदद की जरूरत हो तो वह अपने जिले के पदाधिकारियों से सम्पर्क कर सकता है। मंसूरी साहब नें अपनी सदारत में जयपुर राजस्थान में 27 अप्रैल 08 में 111 जोड़ों के निकाह की कामयाबी पर अल्लाह का शुक्रिया अदा किया और कहा कि मंसूरी समाज की तरक्की का सबसे बेहतर तरीका इज्तिमाई शादियां है, क्योंकि बिरादरी की गाढ़ी कमाई का पैसा दिखावा और जहेज़ के नाम पर बेशुमार खर्च किया जाता है, जिसे बचाकर हम बच्चों को अच्छी तालीम दिला सकते हैं। मंसूरी साहब नें कार्यकर्ताओं से कहा कि वह राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हुए अपनी पहचान बरकरार रखें।

कान्फ्रेंस में हिस्सा लेने वाले जनाब हाजी नबी मंसूरी, ताज मोहम्मद मंसूरी, रफीक मंसूरी, यासीन मंसूरी, इंसाफ मंसूरी, मेंहदी हसन मंसूरी, इकराम मंसूरी, बसीम मंसूरी एडवोकेट, डा. असलम मंसूरी और जनाब इरशाद मंसूरी ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

Scanned with OKEN Scanner

नव नियुक्त मण्डल अध्यक्ष हाजी रब्बीउल्ला मंसूरी के साथ कानपुर मंसूरी समाज के कार्यकर्ता

न्यूतनी जिला उन्नाव में स्टेज पर बैठे हुए अध्यक्ष के साथ ओहदेदरान

अनीस मंसूरी के सर्मथन में मंसूरी समाज कार्यकर्ता जोशो व वलवले के साथ मार्च करके हुए

Scanned with OKEN Scanner

महोबा शादी सम्मेलन में अध्यक्ष अनीस मंसूरी के जानिब से दुल्हनों को बिदाई व सनद देते हुए जनाब मुख्तार मंसूरी (प्रा० सचिव) के साथ बाबू भाई मंसूरी

पण्डाल में हाजरीन

महोबा मंसूरी इज्तिमाई शादियाँ

जहेज और आंसुओं का बड़ा गहरा रिश्ता है। जहेज रहित कम खर्चीली शादियों पर जोर, जिससे किसी फरीक के आंसू न बहें। निकाह हुजूर की सुन्नत है। खुशियों का माहौल पैदा करें और लड़की वालों पर कोई दबाव न डालें।

अमामा बाँधे हुए कॉफ्रेंस सदर जनाब हाजी नबी मंसूरी साथ में जनाब सादिक मंसूरी

महोबा 12 जून,08 - ऑल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसायटी की बैनर तले जिला सदर ज़नाब बाबू मंसूरी और उनकी कार्यकारिणी की देखरेख में कांफ्रेंस मुनक्किद हुई। कांफ्रेंस की सदारत का हक अदा किया ज़नाब हाजी नवी मंसूरी, लखनऊ ने निजामत के फरायज अंजाम दिये जनाब अब्दुल मंसूरी साहब ने और मेहमान-ए-खुसूशी के जिम्मेदार लखनऊ से आये ज़नाब इकबाल मंसूरी और ज़नाब मुख्तार मंसूरी ने दूल्हा और दुल्हन को प्रमाण-पत्र और नकद रूपये का तोहफा पेश किया।

कांफ्रेंस के सदर ज़नाब नबी मंसूरी ने अवाम को खिताब करते हुए कहा कि इस्लाम में जहेज का कोई मकाम नहीं है। हुजूर सल्ला0 ने अपनी बेटी को कोई जहेज नहीं दिया था। लेकिन कुछ हजरात गलत ब्यानी करके हजरत अली के सामान को हुज़ूर सल्ला0 के जरिए दिये गये बीबी फातिमा का जहेज बताकर अवाम को गुमराह करते हैं। हकीकत यह है कि हजरत अली हमारे नवी सल्ला0 की किफालत में उन्हीं के साथ रहते थे। जब हुजूर ने अपनी बेटी के निकाह का पैगाम हजरत अली को दिया तो उन्होंने इसे कुबूल कर लिया। जब जौजेन की गृहस्थी का मामला सामने आया तब हुजूर सल्ला0 ने अली से पूछा आपके पास कुछ है। तब हजरत अली ने जबाव दिया कि मेरे पास एक जिरह है (जंग में पहनने वाली पोशाक)। आपने कहा कि इसे बेच दो, एक साहबी उसे लेकर यहूदी की दुकान पर बेच आये, जो पैसे मिले उससे जरूरत का सामान खरीदा गया और बाकी बचे हुए पैसे हजरत अली को वापस कर दिये गये। अब आप ही बताइये कि यह सामान जो हज़रत अली के पैसों से खरीदा गया था जहेज कहां से हो गया।

इस इज्तिमाई शादियों से यही चाहा जा रहा है कि जहेज का लेनदेन खत्म हो और निकाह को आसान और कम परेशानी का बनाकर अल्लाह के नवी की सुन्नत को जिन्दा किया जाय। बेहतरीन निकाह वह है जिसमें कम खर्च और कम परेशानी हो। दीन के रास्ते से जो भटका दुनिया और आखिरत में जलील होगा।

अमूमन देखा जाता है कि लड़के वाला जब कभी लड़की वाला बनता है उस वक्त उसे अपने किये हुए तमाम गुनाह याद आते हैं, रोता जाता है और समाज को कोसता जाता है। लड़के की शादी

बायें से जनाब मुख्तार मंसूरी, इकबाल मंसूरी, बाबू मंसूरी, कलीम मंसूरी, ...मास्टर बाबू मंसूरी

में यह भूल गया था कि कभी हमें भी लड़की वाला बनना पड़ेगा। जहेज, खूबसूरत दुल्हन और बरात के इस्तकबाल के नाम पर न जाने कितने घर वालों को रूलाया था आज रो रहा है तो इसमें समाज का क्या गुनाह है। जैसा करोगे वैसा भरोगे।

याद रखिए जब बहू मायके से कीमती सामान, जेबर, नकदी, गाड़ी लेकर आती है वह उस वक्त ससुराल वालों के तमाम लोगों को ज्यादा अहमियत नहीं देती। बहुत से ऐसे मौके आते हैं जब बहू मायके से लाई हुई गाड़ी, फ्रिज, टी0वी0 या कीमती सामान छूने से मना कर देती है। सास-ननद की बात घर में चलनी बन्द हो जाती है उस वक्त ससुर अपनी तौहिनी महसूस करता है और चेहरा आंसुओं से तर हो जाता है। बहू के ऊपर घर वालों के आंसुओं का कोई असर नहीं, क्योंकि शादी से पहले बहू के घर वाले आपकी ज्यादतियों से परेशान होकर रोते रहे। उस वक्त आप बहू को बुरा-भला कहते हैं लेकिन जब बहू जहेज के खिलाफ एक रिपोर्ट की धमकी देकर आपकी जवान बन्द कर देती है और आप मन-ही-मन ते और कोसते रहते हैं। इसलिए शादी में ऐसा

खिलाफ हो और बाद में आपको रोना पड़े।

कांफ्रेंस में खुसूसी हजरात जनाब कलीम मंसूरी, लतीफ मंसूरी, हाजी सिद्दीक मंसूरी, रफीक मंसूरी, नजीर मंसूरी, वशीर मंसूरी, असफाक मंसूरी, इशहाक मंसूरी, बली मुहम्मद मंसूरी, अजीज मंसूरी, मानखा मंसूरी, नसीम मंसूरी, अखलाक मंसूरी, अजीज मंसूरी, सुल्तान मंसूरी झांसी, नासिर मंसूरी कबरई, गफूर मंसूरी और जनाब हाजी नूर मुहम्मद मंसूरी मौजूद रहे।

मेहमा-ए-खुसूसी का संदेश

हाजी नवी मंसूरी सदर कांफ्रेंस के जरिए पढ़ा गया मेहमान-ए-खुसूशी जनाब अनीस मंसूरी का संदेश।

हाजरीन-ए-जलसा मुझे अफसोस है कि मैं एक बड़ी कौमी जिम्मेदारी निभाने की गरज से इज्तिमाई शादियों में न पहुँच सका। मैं अपना संदेश आपकी खिदमत में भेज रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप मेरी मजबूरियों को समझते हुए दर-गुरज करेंगे।

आज के जल्से में सभी मेहमानों तन्जीम

मंसूरी समाज की बेदारी से सियासी पार्टियों में हलचल

प्रदेश में 35 सीटें मंसूरी बाहुल्य, एक विधायक जीता और चार लगभग 1000 वोटों के फर्क से हारे। समाज में व्यवसायिक तालीम पर जोर, तंजीम मुसलमानों को बांटने का काम नहीं करती बल्कि मुस्लिम समाज को मज़बूत करने के लिए मंसूरियों को बेदार करना बहुत जरूरी है।

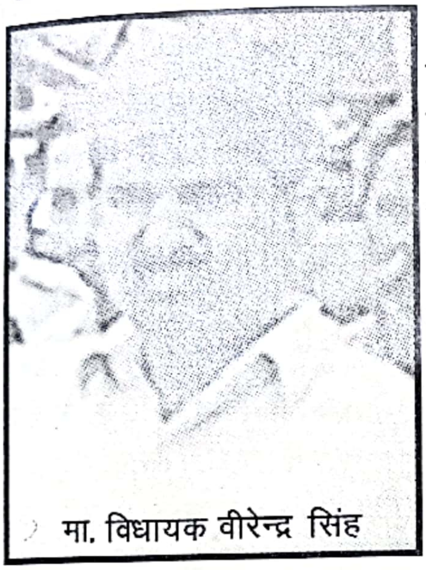

मा. विधायक वीरेन्द्र सिंह

बरेली- नामानिगार जनाब ज़ाकिर मंसूरी से मिली जानकारी के तहत 20 अप्रैल 08 पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार संजय गांधी कम्युनिटी हॉल में आल इण्डिया जमीयतुल मंसूरी सोसाइटी उ.प्र. का विशाल सम्मेलन आयोजित किया गया। आगाज़ तिलावत-ए-कुरआन से हाजी अंजुम अली मंसूरी ने किया। मेहमान-ए-खुसूरी मा. वीरेन्द्र सिंह विधायक केन्ट, जनाब जाहिद मंसूरी राष्ट्रीय महासचिव, सरताज मंसूरी मण्डल प्रभारी बरेली, शरीफ मंसूरी मण्डल प्रभारी लखनऊ व जनाब अनीस मंसूरी प्रदेश सदर का गुलपोशी से इस्तकबाल किया गया। राष्ट्रीय महासचिव जनाब जाहिद मंसूरी नें मंसूरी समाज को अपने अधिकारों के लिए बेदार किया। हिन्दुस्तान में रहने वाले करोड़ों मंसूरियों को आज तक कोई भी मान-सम्मान नहीं मिल पाया। किसी भी सियासी पार्टी नें मंसूरी समाज को उसका हक दिलाने की बात नहीं की। इसके लिए हमें खुद ही खड़ा होना होगा, फिर चाहे मंसूरी समाज़ को विधानसभा का घेराव ही क्यों न करना पड़े। अपनी ताकत का मुजाहिरा किये बिना कोई पार्टी कुछ भी देने को तैयार नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि मेहनत मंसूरी करता है और उसका फायदा दूसरी बिरादरी के लोग उठाते हैं। हमें अपनी तंजीमों को ताकतवर बनाने और समाज में तालीम की रूह फूंकने की जरूरत है।

प्रदेश अध्यक्ष जनाब अनीस मंसूरी ने कहा कि जमीयत कोई नया संगठन नहीं है इसको पूरे हिन्दुस्तान में पहचान मिली हुई है। प्रदेश में लगभग 35 सीटें मंसूरी बाहुल्य आबादी की हैं, मैने पूरे प्रदेश का दौरा करके सियासी पार्टियों में हलचल मचा दी है। मेरी महनत से समाज का एक विधायक विधानसभा पहुँचा और 4 प्रत्याशी लगभग 1000 वोटों के फर्क से हारे हैं। हमारा समाज दिशाहीन समाज है जिसकी दिशा नहीं होती उसकी दशा बिगड़ जाती है, मैने लखनऊ में सम्मेलन कर समाज को संगठित किया। आपने तालीम पर बोलते हुए कहा कि समाज को अपने बच्चों को व्यवसायिक तालीम पर जोर देना चाहिए, जिससे कि समाज में डाक्टर,

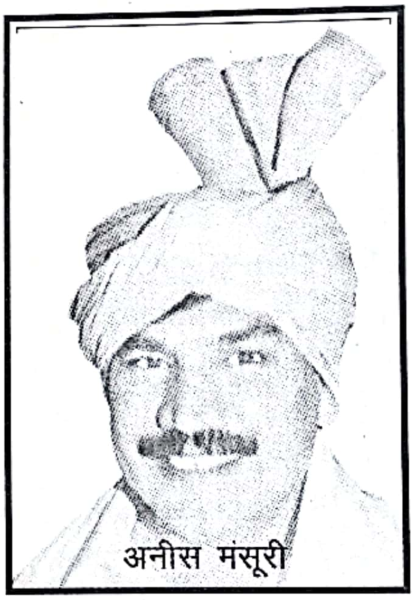

अनीस मंसूरी

इंजीनियर और तकनीशियन बन सकें, जिससे समाज को इज्जत और आर्थिक मजबूती मिले। आपने कहा कि हम समाज की बेदारी की बात करते हैं तो कहा जाता है कि ये तो मुसलमानों को बांटने का काम कर रहे हैं, हम मुसलमानों को बांटने का काम नहीं करते बल्कि हम समाज की तरक्की की बात करते हैं। हम समाज की तरक्की चाहते हैं इसके लिए हम कोई भी कुर्बानी देने को तैयार हैं। समाज अब जाग चुका है और अब सत्ता में हिस्सेदारी की शुरूआत भी हो चुकी है।

मा0 वीरेन्द्र सिंह जी विधायक केन्ट ने मंसूरी सामज के लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पिछले विधानसभा चुनाव में हमें मंसूरी समाज का पूरा समर्थन मिला। ये समाज जो कहता है वही करता है। इस समाज को पहले बैंक वोट के तौर पर इस्तेमाल किया गया, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा अब इस समाज का कार्य प्राथमिकता के आधार पर होगा। उन्होंने कहा कि जो 16 सूत्री मांग-पत्र दिया गया है, मैं पूरा प्रयत्न करूंगा कि ज्यादा से ज्यादा मांगे मानी जायें।

जनाब अंजुम अली एडवोकेट ने कहा कि देश की 60 साला आजादी के बाद भी पसमादा बिरादरियों में सबसे बड़ी मंसूरी बिरादरी है जिसको आज तक उसका हक नहीं मिला, जो सिर्फ वादों के अलावा कुछ नहीं पा सका। ये समाज तालीम के क्षेत्र में पिछड़े होने की वजह से राजनीतिक सम्मान नहीं पा सका। अब समाज जाग गया है जिसकी मिसाल दिल्ली के लालकिला मैदान की विशाल रैली है। अब हमें अपने अधिकारों के लिए किसी भी पार्टी से भीख मांगने की जरूरत नहीं है, बल्कि हम सत्ता संघर्ष के दौड़ में सड़कों पर निकल आयेंगे।

एक नाम - एक परचम

A.I.J.M.S. Delhi

7 करोड़ मंसूरियों की पहचान सिर्फ मंसूरी समाज नाम और एक झण्डा पहचान जो चार सफेद और पांच नीली पट्टियों वाले से होगी।

कान्फ्रेंस को खिताब करने वाले हज़रात

जनाब- परवेज मंसूरी, जाकिर मंसूरी (युवा नेता), डा. फाजिल मंसूरी, शरीफ मंसूरी, फारूख मंसूरी, जफर मंसूरी, अब्दुल कय्यूम मंसूरी, शब्बीर मंसूरी, कैफी मंसूरी, फैजान मंसूरी, सिराज मंसूरी व दीगर।

इसी मौके पर मा. वीरेन्द्र सिंह विधायक एवं प्रदेश सदर जनाब अनीस मंसूरी को तलवार भेंट कर सम्मानित किया गया और मंसूरी समाज की विशेष खिदमात के लिए जनाब परवेज मंसूरी, डा. फाजिल मंसूरी, डा. बेनजीर मंसूरी को शाल पहनाकर सम्मानित किया गया। सम्मेलन स्थल पर पहुंचे खानदाने आला हज़रत से अफरोज रजा खां की दस्तारबंदी करके इस्तकबाल किया गया।

Iqbal Mansoori Ph.: 0551-2332430, 9415210740

New Bharat Light House

4 Rati Chouk, Gorakhpur-5

प्रो0 अब्दुल मजीद मंसूरी Ph.: 05852- 220657 (R) Mo.: 9839669006

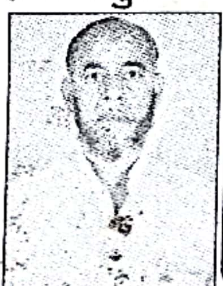

नौशाद क्लाथ स्टोर

सूटिंग, शर्टिंग, लेडीज़ सूट, पर्दा, बेड शीट व हैण्डलूम टेरीकॉट के प्रमुख विक्रेता

5 नौशाद मार्केट के पास, मुन्नेमियां चौराहा, हरदोई

Scanned with OKEN Scanner

सियासी पहचान के लिए इज्तिमाईयत जरूरी

मंसूरी समाज आगे बढ़े और थामले परचम, पसमांदा समाज को अपने हुकूक की जद्दो जहद खुद करनी होगी। तालीम हासिल करो और एक होकर अपनी सामाजिक पहचान के साथ सियासी पहचान भी बनाओ।

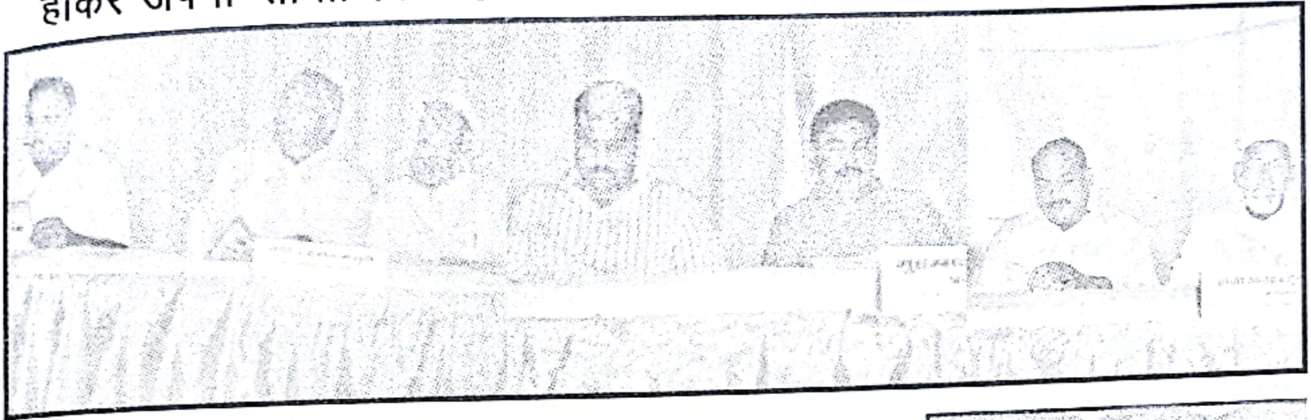

धामपुर 8 जून 08- मंसूरी पैगाम नामानिगार से मिली जानकारी के तहत आल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी उ.प्र. का जिला सम्मेलन शुभम् विवाह मण्डप, कालागढ़ रोड, धामपुर, जिला- बिजनौर मुनक्दि हुआ। जिसकी सरपरस्ती जनाब हाजी अज़हर हुसैन मंसूरी उर्फ बदलू ठेकेदार नें की। सदारत का हक अदा किया जनाब अनीस मंसूरी लखनऊ ने और निज़ामत बज़रिऐ जनाब इरशाद मंसूरी। तिलावत-ए-कुरआन जनाब मुफ्ती मोहम्मद कमर साहब शहर काज़ी धामपुर ने अंजाम दी।

खुतब-ए-इस्तकबालिया

शमशाद मंसूरी, बिजनौर

स्टेज पर बैठे हुए इज्ज़तमआब आली जनाब अनीस मंसूरी सूबाई सदर, जनाब मो0 गाज़ी विधायक अफजलगढ़, जनाब अशोक कुमार जी राणा विधायक धामपुर, जनाब अकील मंसूरी व जनाब ज़ाहिद मंसूरी मुरादाबाद, अंजुम अली मंसूरी बरेली, अब्दुल समद मंसूरी और जनाब सरताज मंसूरी शाहजहांपुरी, जिला जमीयतुल मंसूर के ओहदेदारान और बिजनौर जिले के कोने-कोने से तशरीफ लाने वाले मोअज्ज़ि हज़रात, अस्सलामोअलैकुम

आपको यहाँ इस बड़ी तादाद में जमा देख कर मेरा दिल खुशी से बाग़-बाग़ हैं, आप हज़रात इस जून की तपती हुई गर्मी और सफर की परेशानी बर्दाश्त कर हर तरह की जानी व माली कुर्बानी देकर हमारी आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए यहां तशरीफ लाये। यह इस बात की बाज़े दलील है कि आप हज़रात के दिलो में अपनी इस मंसूरी समाज से बेपनाह मोहब्बत हैं।

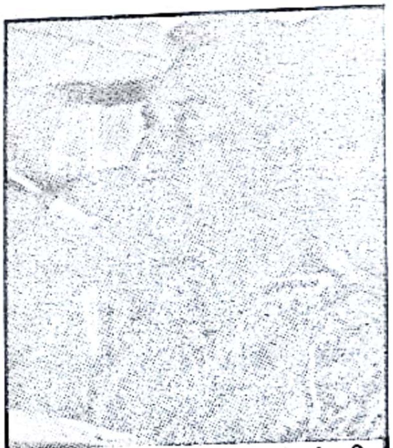
निज़ामत जनाब इरशाद मंसूरी

ग्रामीक़द्र हज़रात जिला बिजनौर उ.प्र. के पश्चिमी इलाके में उत्तराखण्ड की सीमाओं से लगा हुआ एक ज़राअती जिला है जो उ.प्र. में अपनी अलग पहचान और हर मैदान में अपना एक तारीखी मकाम रखता है। इस जिले नें जंगे आज़ादी में एक बहुत बड़ा अहम किरदार अदा किया है जो तारीख के ओराक़ में सुनहरे अलफाज में लिखे जाने के काबिल है। जिला बिजनौर नें मुल्क की आजादी में बेशकीमती लीडरान दिये जो खुद अपनी मिसाल आप थे। मौलाना मोहम्मद अली जौहर व मौलाना शौकत अली व मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हिफ्जुर्रहमान स्योहारवी और हाफिज मोहम्मद इब्राहीम जेसे कायदीन मुल्क को फराहम किये। सर

सय्यद अहमद खां ने तालीमी इंक्लाब का आगाज़ यहीं से किया था और अलमदीना अखबार नें पूरे मुल्क में आजादी की रूह फूंक दी थी।

मोअज्ज़ि हज़रात, जिला बिजनौर में मंसूरी बिरादरी की बहुत बड़ी तादाद मुख्तलिफ कस्बों व शहरों में आबाद है, जिसे फरामोश करके जिले के समाजी, सियासी और मआशरती मुआमलात को मुकम्मल तौर पर नहीं सुधारा जा सकता, लिहाजा जरूरत महसूस की जा रही है कि हम लोग मुल्क की रियासत की जमीयतुल मंसूरी सोसाइटी से अपने आप को और जहां-जहां तक मंसूरी समाज के लोग आबाद हैं उन सब को जोड़ कर अपने रहन-सहन को दुरूस्त करें और पूरे समाज में एक वाहिद प्रोग्राम तालीम से मंसूरी समाज के हर नौनिहाल को आरास्ता करने की एक मुत्तहिदा जद्दो जहद का आगाज़ करें और इसके लिए हर फर्द अपनी तमाम तर सलाहियात को सर्फ करें।

हज़रात मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि पूरा यकीन है कि चन्द दिनों में ये बिरादरी बुलन्दियों के उस मकाम पर पहुंच जायेगी जहां इसे बहुत पहले होना चाहिए था, क्योंकि मुअल्लमें इंसानियत रहमतुल लि0 ने फरमाया था (अल इलमु वसीलतुन-लिकुल्ली फजीलाह) यानी हर बुलंदी पर पहुंचने के लिए इल्म का ज़ीना इस्तेमाल करना जरूरी है। इस उम्मीद के साथ कि आप तमामी हज़रात मेरी इस राय पर आज इस कांफ्रेस में अहद करें कि मंसूरी समाज का कोई भी बच्चा किसी भी कमी मसलन पैसा या वारिसान का न होने की वजह से तालीम से महरूम न रहे। आखिर में मैं आप हज़रात का जिला बिजनौर में तशरीफ लाने पर दिल की गहराईयों से खैरमकदम करता हूँ और माज़रतख्वाह हूँ कि आपकी शयाने-शान हक के मेज़बानी अदा न कर सका इसके लिए अफसोस है।

जनाब मोहम्मद ग़ाज़ी विधायक जी ने अपनी छोटी सी तकरीर में कूज़ः में समन्दर भरकर कहा कि नेताओं को अपनी पहचान खुद बनानी होगी। हमारे कौमी और पहचानी मसाइल के लिए अल्लाह ने बिरादरियां बनाई, हम सब मिल कर तालीम पर गौरो फिक्र करें और आधा पेट खायें, हम कामयाब हो जायेंगे।

जनाब अशोक कुमार जी राणा ने कहा कि बी.एस.पी. ने मंसूरी समाज को 5 टिकट दिये और जनाब अनीस मंसूरी साहब को उ0प्र0 का सामाजिक कॉआर्डीनेटर बनाया। आप तमाम मंसूरी भाईयों का फर्ज है कि अनीस मंसूरी को मज़बूत करें, कौमी तरक्की के लिए सामाजिक बुराईयों को दूर करना जरूरी है। जो समाज सियासत में नेतृत्व नहीं लेता वह पीछे रह जाता है। मैं आप सब को यकीन दिलाता हूँ कि मंसूरी समाज जब भी हमें याद करेगा मैं उसकी खुशी और दुःख में साथ खड़ा नज़र आऊँगा।

जनाब अनीस मंसूरी लखनऊ नें आवाम को खिताब करते हुए कहा कि किसी भी समाज की तरक्की और कामयाबी के लिए उसे अपनी लड़ाई खुद ही लड़नी होगी। दूसरों के सहारे नामुमकिन है। कामयाबी का सबसे पहला हथियार तालीम है। दुनिया में जिन हज़रात ने जिस कदर तालीम पर महनत की उन्होंने उसी मेआर से नौकरिया, कारोबार और सियासत में तरक्की और कामयाबी हासिल

बाकी पेज 27 पर

दलित मुस्लिम क़यादत

रोशन अली मंसूरी, मकराना, राजस्थान

पसमांदा, खुसूसन मंसूरी समाज या दलित मुसलमान जब अपने हुकूक की लड़ाई की बागडोर अपने हाथों में लेते है तो उन पर तफरीक-ए- मुस्लिमीन का इल्ज़ाम लगाते हुए कहा जाता है कि मुसलमान को बांट रहे हैं। आला जाति के नाम-नमूद मुसलमान दलित मुसलमानों के हुकूक की लड़ाई से कतराते हैं, क्योंकि इस लड़ाई में जातीतौर पर उन्हें कुछ मिलने वाला नहीं ऐसा उनका मानना है। अगर दलित मुसलमान मज़बूत होगा तो क्या आप मज़बूत नहीं होंगे।

मुसलमानों का वह तबका जो पेशे के एतबार से हिन्दू दलितों से मशाबहत रखते हैं जैसे- मेहतर, धोबी, चमार, कोरी, खटीक वगैरह, जिनकी तादाद मुल्क में लगभग 85 प्रतिशत है। मुसलमान जब भारत आये और इनके मसावात देखकर बहुत से हिन्दुस्तानी वाशिन्दे मुसलमान हुए जिनमें शूद्र भी शामिल थे। मुसलमानों ने इन्हें अपना सरदार बनाया और मेहतर का खिताब दिया, जो एक फार्सी लफ्ज है जिसके मायने सरदार या अफसर होते हैं। आज भी ईरानी फौज के अफसर मेंहतरान सिपाह कहलाते हैं। मुल्क के मतलब परस्त और चालाक लोगों ने इस खूबसूरत लफ्ज मेहतर को गाली बना दिया। यही वजह है कि मंसूरी समाज की किसी नें खबर तक न ली और ये सदियों से पिछड़ता चला गया।

मुल्क को आजादी मिलते ही दलित समाज को जो कानूनी हुकूक और सहूलियतें दी गईं थीं उसमें मज़हबी (धार्मिक) तफरीक नहीं रखी गई थी। लेकिन 1950 में सदर जमहूरिया डा0 राजेन्द्र प्रसाद नें एक हुक्मनामा जारी करके हिन्दू और मुसलमानों को दो हिस्सों में बांट दिया और कहा गया कि दलितों को मिलने वाली तमाम सहूलिसतें सिर्फ हिन्दू दलितों को ही मिलेंगी और वजह बताई गई कि गैर हिन्दू, दलितों की तरह छुआ-छूत के शिकार नहीं है। इस लिए वे इन रियायतों के हकदार ही नहीं हैं। देखा आपने कि सदर मौसूफ नें (एक ही सफ में खड़े हो गये महमूदो अयाज़) की इस्लामी रहमत को कितनी हिकमत से इन बेचारे गरीब मुसलमानों के लिए ज़हमत में बदल दिया। मुसलमानों को खबर भी न हुई कि इस हिकमत के सबब इनकी जिन्दगियां नाउम्मीदी और अंधेरों में डूब गईं। इसके लिए उस वक्त के तमाम सियासी, कौमी और मज़हबी रहनुमा जिम्मेदार हैं कि जिन्होंने वक्त रहते कौम को इससे आगाह नहीं किया।

1950 का सदारती हुक्मनामा इस वजह से जारी किया गया था कि अगर मुसलमान दलितों को भी सारी मराअते मिल जाती हैं तो हिन्दू दलित सामाजिक मसावात हासिल करने के लिए तबदील-ए-मज़हब का सिलसिला शुरू हो जाता, लेकिन बाद में सिख और बौद्ध मज़हब के मानने वाले भी इसमें शामिल कर लिए गये। जब बौद्ध व सिखों को दलितों में शामिल किया गया तो मुसलमानों को इससे महरूम क्यों रखा गया। संघ परिवार फौरन ही चिल्ला उठता कि सिख और बौद्ध तो हिन्दू समाज का हिस्सा हैं, क्योंकि इनका कोई भी पर्सनल लॉ नहीं है। इसका जवाब ये है कि बौद्ध व सिख धर्म के मानने वाले भी ये मान लें कि वह हिन्दू धर्म का हिस्सा हैं तो हम भी मान लेंगे। जब कभी बौद्ध और सिखों को हिन्दू कहा गया तो दोनो धर्म के लोग भड़क उठे। हद तो ये है कि जैन धर्म के मानने वाले भी सुप्रीम कोर्ट का फैसला ले आये हैं कि वे हिन्दू नहीं हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि आजादी के बाद जब मुल्क में प्रजातंत्र लागू हुआ उस वक्त दलित समाज की आबादी 85 प्रतिशत थी। हकीकत में हुकूमत की बागडोर इन्हीं के हाथों में होनी चाहिए थी। लेकिन चालाक सियासतदानों ने इस तबके को दो हिस्सो में तकसीम करने के लिए धारा 341 का इस्तेमाल किया और हिन्दू व मुसलमानों को दो फिरकों में बांट दिया। एक हिस्से को तमाम सहूलिएतें दे दी गई और दूसरे को उनसे महरूम कर दिया गया ताकि ये आपस में कभी मिलने न पायें। उन्हें डर था कि ये आगे चलकर दोनों तबके मिल जाते हैं तो हुकूमत की बागडोर इनके हाथों में होगी। इसी लिए बड़ी सोच समझ कर धारा 341 का इस्तेमाल किया गया।

अब मुस्लिम समाज का फर्ज है कि वह दलित मुसलमानों के उस मारे हुए हक को दिलाने के लिए हर तरह की कानूनी लड़ाई का सहारा लें। क्योंकि दलित तबका इतना मज़बूत नहीं है कि वह अपनी लड़ाई खुद लड़ सकें।

ग़मगीन खबरें

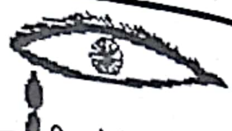

जहां होती हैं खुशियां वहां ग़म भी होते हैं। जहां बजते हैं नक्कारे, वहां मातम भी होते हैं।

लखनऊ आल इण्डिया जमीयतुल मंसूरी सोसाइटी के सरपरस्त आली जनाब हाजी मुरादअली मंसूरी साहब के बेटे इरफान मंसूरी, 8 मेवा नर्सरी, निशातगंज, लखनऊ का इंतिकाल 20 जून 08 को हो गया है, इन्ना0 ....

मरहूम की उम्र लगभग 49 साल थी। आप मेडिकल हेल्थ में सरकारी मुलाजिम थे, लगभग 1 साल से गुर्दे की तकलीफ नें आपको परेशान कर रखा था। इलाज के दौरान अचानक तेज दर्द हुआ और रूह परवाज़ कर गई। पसमांदगान में आपके सिर्फ 1 बेटा है।

लखनऊ आली जनाब हाजी मो0 हदीस मंसूरी सरपरस्त ए.आई.जे.एम.एस. उ.प्र. इंदिरा नगर, लखनऊ की दुख्तर नेकअख्तर का इंतिकाल दौराने इलाज दिल्ली जाते वक्त रास्ते में हरकते कल्ब रूक जाने से हो गया है। इन्ना0 ....

बेटी की उम्र लगभग 14 साल थी। इस छोटी सी उम्र में बच्ची नें तालीम में एक मयार हासिल किया, खानदान के लिए यह कमी नाकाबिले बरदास्त है।

गोण्डा- जनाब हाजी अजीजउल्ला मंसूरी जो एक रेलवे मुलाजिम थे, आपकी उम्र लगभग 95 साल थी, सांस के मर्ज के साथ ही आपने आखरी सांस ली और दुनिया को खैरबाद कह दिया, इन्ना0 ....

मरहूम नेकदिल और दीनदार इंसान थे, मुलाज़मत के अलावा बचा हुआ वक्त ज्यादातर मंसूरी समाज के लिए सर्फ किया करते थे। जहां कहीं भी बिरादरी पंचायत या पेचीदा मसाइल होते थे आपको जरूर बुलाया जाता था। अल्लाह ने आपको ऐसा हुनर दिया था कि चन्द लमहात में दोनो फरीकों को मुतमईन कर देते थे। पसमांदगान में आपके 1 बेटा और 2 बेटियां मौजूद हैं। आखिरी सांस सज़्दे में ही जिस्म से जुदा हुई।

उज्जैन म.प्र.- देर से मिली जानकारी के तहत जनाब शमीम मंसूरी के वालिद जनाब हाजी मो0 इसहाक मंसूरी मास्टर साहब का इंतिकाल पुरमलाल 17 मई 08 को फीगंज, उज्जैन में हो गया। इन्ना0 ....

मरहूम की उम्र लगभग 70 साल थी। आपकी दीनी और कौमी खिदमात को मंसूरी समाज के लोग हमेशा याद रखेंगे। पसमांदगान में एक खुशहाल कुन्बा छोड़कर दुनिया-ए-फानी से विदा हो लिए। जनाज़े की नमाज़ कसीर तादाद में लोगों ने अदा की।

बाराबंकी- सोसाइटी आफिस लखनऊ से मिली जानकारी के तहत डा0 अजीज मंसूरी उर्फ डा0 बब्लू सदर जिला तंजीम बाराबंकी के वालिद मोहतरम जनाब डा0 जान मोहम्मद मंसूरी का इंतिकाल 18 जून 08 को आपके आवाई वतन ग्राम-पुखरनी में लम्बी बीमारी के बाद हो गया। इन्ना0 ....

डा0 मंसूरी साहब लम्बे वक्त से सांस व लक्वा के मरीज थे। रात अचानक मरहूम की हालत ज्यादा खराब हो गयी। इलाज के सिलसिले में लखनऊ जाते समय रास्ते में रात 10 बजे आपकी रूह हरकत-ए-कल्ब रूक जाने से परवाज कर गई। मरहूम की उम्र लगभग 70 साल थी। पसमांदगान में आपके 2 बेटे हैं। छोटे बेटे जनाब नियाज मंसूरी उर्फ पप्पू की रस्म-ए-निस्बत (सगाई) हाल ही में होने वाली थी। घर में खुशियों का माहौल था, जो ग़म में बदल गया।

बरेली- जनाब मजीद मंसूरी जिला हरदोई से मिली जानकारी के तहत मोहम्मद मियां उर्फ बब्बू मंसूरी मालिक सकलानी गुलाब बेकरी बरेली का इंतिकाल पुरमलाल दिल की बीमारी में इलाज के दौरान राम मनोहर लोहिया अस्पताल, दिल्ली में 3 जुलाई 08 को हो गया था। इन्ना0 ....

मरहूम जनाब मजीद मंसूरी के समधी थे। आपकी उम्र लगभग 60 साल थी। वारिसान में आपके तीन बेटे और एक बेटी है। मरहूम का गौर-ओ-कफन बरेली में 4 जुलाई को हुआ। जनाज़े की नमाज कसीर तादाद में लोगों ने अदा की।

मरहूमों को खिराज-ए-अकीदत पेश करने के लिए आर्जी तंजीम आफिस में तंजीम के सदर जनाब अनीस मंसूरी, लखनऊ की सरपरस्ती में एक बैठक मुनक्किद हुई। जिसमें तमाम ओहदेदारान और खानदाने मंसूरी पैग़ाम के लोगों नें मरहूमों के खानदानों के साथ पेश आए हादसों में पसमांदगान को सब्र और मरहूमों के लिए दुआए मगफिरत की।

मरहूमों के लिए दुआएमगफिरत और पसमांदगान के लिए ताज़ियत रसूल सल्ल0 की सुन्नत है। इसे जरूरी समझ कर अमल में लाने की जरूरत है।

इस्लाह-ए-मुआशरह

आओ फरीक नहीं रफीक बन कर काम करें, कौमी वका के लिए इज्तिमाईयत जरूरी, तंजीम में सियासत नहीं बल्कि तंज़ीम से सियासत हो। एक लीडरशिप में काम करें, अनीस मंसूरी के काम की चर्चायें पढ़ीं-सुनी व देखकर उनसे मुतासिर हुआ इसलिए तमाम साथियों के साथ किसी पार्टी में नहीं बल्कि बड़े क़बीले से जा मिला, अगर कोई जिम्मेदारी मिली तो उसे बखूबी निभाऊँगा।

बायें से जनाब इकराम मंसूरी, अनीस मंसूरी, हाजी रवीउल्ला मंसूरी, नौशद मंसूरी व शब्बीर मंसूरी

कानपुर 29 जून 08- हाजी शाकिर अली मंसूरी से मिली जानकारी के तहत जनाब हाजी रवीउल्ला मंसूरी की दावत पर जनाब अनीस मंसूरी सदर आल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी, लखनऊ, जनाब शब्बीर मंसूरी के दौलत खाना जाजमऊ कानपुर तशरीफ लाये, जहां बाद नमाज़ मगरिब एक बैठक हुई जिसके मेहमान-ए-खुसूसी आली जनाब अनीस मंसूरी लखनऊ और सदर का ओहदा सम्भाला जनाब रवीउल्ला मंसूरी नें, निज़ामत का हक अदा किया जनाब हाजी नबी मंसूरी सम्पादक मंसूरी पैगाम।

जनाब रवीउल्ला मंसूरी साहब नें कानपुर के मंसूरी सामज पर रोशनी डालते हुए कहा कि उ. प्र. में कानपुर ही एक ऐसा मकाम है जहां सूबे में सबसे पहले मर्दुमशुमारी का काम पूरा किया गया। जिसका सहरा हमारे मरहूम बुजुर्ग जनाब मो0 इस्माईल साहब चमनगंज और सेक्रेट्री जनाब अब्दुल सत्तार मंसूरी के खाते में जाता है जिन्हों ने 1960 के दशक में कानपुर मंसूरी समाज की आबादी 80 हज़ार राजिस्टर्ड की और कौमी भलाई के तमाम काम अंजाम दिये। बुजुर्ग कौमी रहनुमाओं के बाद काम की बागडोर अब्बुल हसन मंसूरी ग्वालटोली के हाथ आई। जनाब अब्बुल हसन मंसूरी की मेहनत और लगन का नतीजा था कि बिखरी हुई उ.प्र. की कौमी तंजीम को कानपुर में इकट्ठा करके बेदारी की ऐसी रूह फूंकी कि आज भी उ.प्र. कौमी वका का झंडा हाथ में लेकर सबसे ऊँचाईयों पर खड़ा है, लेकिन रूह फूंकने वाली सरज़मी कानपुर को दुश्मनों की ऐसी नज़र लगी कि अब्बुल हसन साहब के इंतिकाल के बाद तंजीम में बिखराव आता चला गया और लोग डेढ़ ईंट की अपनी-अपनी मस्जिदे बना कर खुद इमामत करने लगे। मुझे भी एक ऐसे ही जमघट ने बरगला दिया। मैं कभी किसी काम करने वाले की गीबत व टांग खींचने को पसंद नहीं करता। लेकिन अब ऐसी बाते आम हो रही हैं जिसमें फलाही काम कम जाति मफाद की तरफ लोगों का झुकाव है।

मैं अनीस मंसूरी उ.प्र. के काम से पूरी तरह से मुतमईन हूँ। इन्होंने गांव-गांव जाकर मंसूरी समाज को बेदार किया है, साथ ही सियासत के प्लेटफार्म पर मंसूरी समाज की एक पहचान बनाई। अब उ.प्र. ही नहीं बल्कि अब तो इनके काम की गूँज पूरे मुल्क में हो रही है। पिछले दिनो जयपुर राजस्थान कान्फ्रेंस व इज्तिमाई शादियों में आपकी सदारत इस बात का सबूत है। अब वक्त आ गया है कि उ.प्र. के तमाम कौमी भलाई के काम करने वालों को एक झंडा और एक बैनर तले इकट्ठा होने का, ताकि अनीस मंसूरी के हाथों को ताकत मिले और वे आगे बढ़कर केन्द्र की बागडोर अपने हाथों सम्भालें। आज मैने फैसला किया है कि मैं अपने तमाम साथियों के साथ अनीस मंसूरी के बैनरतले पूरी ईमानदारी और लगन से कौमी भलाई

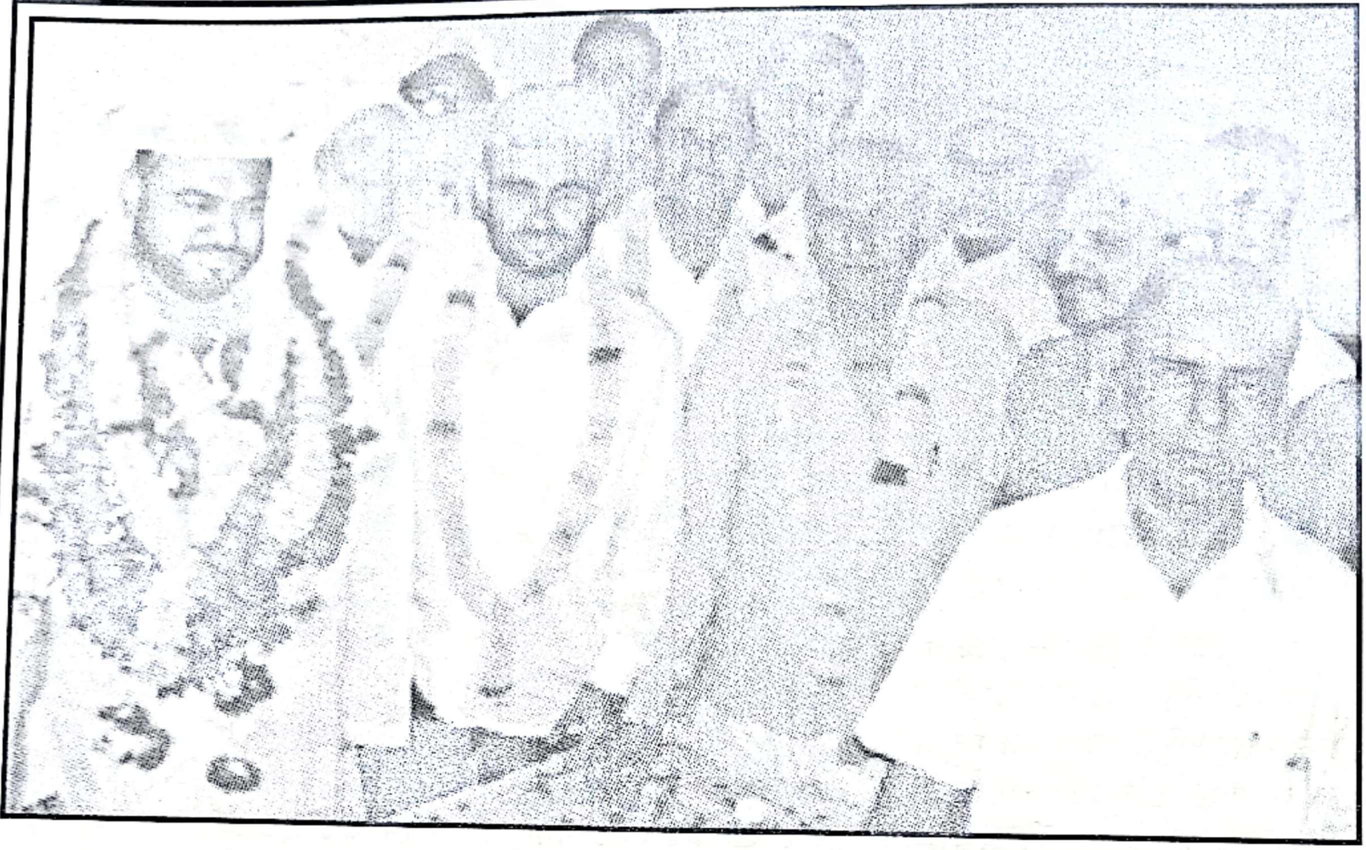

का जो भी काम हमें सोंपा जायेगा करूंगा।

नौशाद मंसूरी कानपुरी नें कहा कि हमें कल को अच्छा बनाने के लिए बिरादरी को आगे बढ़ाने की जरूरत है। अगर हमें मुआशरे में साथ चलना है तो हमें अपने घर की कमियो और बुराईयों को कम कर घर को साफ सुथरा रखना होगा। हम खूब मंसूरी समाज की बात करें लेकिन सियासत में भी दखल जरूरी है। हम सब साथ चलें तो बड़ी बात है ताकि हमारी पहचान दूसरों के लिए भी काबिले कुबूल हो। बी.एस.पी. से हमें सबक लेने की जरूरत है। मा0 कांशीराम जी ने सियासत में जो कदम रखा और कामयाब हुऐ। हमें भी अपने सदर के साथ लब्बैक कहने की जरूरत है। गलत सोच वाले लोगों के साथ मैं एक मिनट भी रहना पसंद नहीं करूंगा, जो समाज के लिए फायदेमंद न हों। उ.प्र. की कौमी सियासत में अब नौजवानों ने कदम रखा है, मैं भी उनके साथ काम करंना पसंद करूंगा। जनाब रवीउल्ला मंसूरी मेरे बड़े भाई हैं, मैं उनके साथ था और रहूँगा।

मेहमान-ए-खुसूसी जनाब अनीस मंसूरी ने खिताब करते हुए कहा कि हमें भाईचारा बनाने की जरूरत है। लोग टांग ज्यादा खींचते हैं, मैं किसी पर टिप्पड़ी नहीं करता, काम के लिए बड़ा मैदान खाली पड़ा है। कानपुर शहर तो बहुत पहले से बेदार है जरूरत तो देहाती क्षेत्रो में काम करने की है। शहरी हज़रात तो स्टेज की तरफ भागते हैं, हमें देहातों को शहर से जोड़ना है। देहातों के हालात बहुत ही खराब हैं उन्हें सुधारने की सख्त जरूरत है। तालीम, तिजारत और कारोबार से लगाकर मंसूरी समाज के हालात बदले जा सकते हैं। पश्चिमी उ.प्र. में हमारे साथियों ने बड़ा काम किया है। पूर्वी उ.प्र. में बेदारी की लहर तो आई है लेकिन वहां काम की बहुत जरूरत है।

हमनें सियासत में अपनी पहचान के साथ ही मंसूरी समाज को पहचनवाया है और समाज के लोगों ने इसका फायदा भी उठाया है। मैने सियासी स्टेजों से सीख ली है, जहां कई सियासी पार्टियों के नेता आकर आपने लुभावने भाषण देकर और हमारी मांगों के लिए हामी भर कर चले गये। आज तक किसी ने बिरादरी की एक मांग तक पूरी नहीं की। साथ ही वह यह अहसास लेकर गये कि मंसूरी समाज किसी का नहीं तो हम काम क्यों करे।

इसलिए हमें खुलकर एक पार्टी की सियासत करनी होगी। हमारी छोटी-छोटी मीटिंगों का यह हाल है कि वहां हजारों लोगों की भीड़ इकट्ठी हो रही है, ये कौमी बेदारी का बेहतरीन नमूना है। अशराफ बिरादरियों का जिक्र करते हुए कहा कि अपनी बेटी की शादी के लिए अगर तालीम याफ्ता तिजारत या नौकरी से जुड़ा लड़का मिलता है तो किसी सिजरा या सनाख्त की जरूरत नहीं है और अगर लड़के की शादी करना है तो दुनिया की सनाख्त करेंगे, सिजरा ढूंढ़ेगे, बड़े-छोटे, ऊँच-नीच, कमतर और अबतर की बात करेंगे। ये बात न तो दीनी ऐतबार से सही है और न दुनियादारी के लिहाज़ से।

मंसूरी साहब नें आगे कहा कि हमें संगठित होने की जरूरत है। सभी को प्यार व मोहब्बत से साथ लेकर चलने की जरूरत है, किसी के दिल को ठेस पहुंचाकर नहीं। करोड़ों गरीब मंसूरियों की उम्मीदें हमसे जुड़ी हैं, हमें कम वक्त में अच्छा माहौल बनाने की जरूरत है ताकि हम समाज के कुछ काम आ सकें।

बिरादरी के लोगों को भी चाहिए कि सब्र से काम लें, मेरे पास कोई ओहदा या जादू तो है नहीं, अभी हमसे काम की उम्मीदें कम करें। तुनकमिजाज़ी से काम न लें, अपने नेता की इज्ज़त करना सीखें, लोगों के बहकावे में ना आयें, अपनी इच्छाओं को जब्त करने की आदत डालें तो हम जल्द ही कामयाब होंगे। कानपुर से हमें बड़ी ताकत मिली है, पिछली कांफ्रेंस चेम्बर हाल में हुई थी, वहीं जनाब अब्बुल हसन साहब (मरहूम) ने मुझे उ.प्र. का सदर बनाने का प्रस्ताव भी किया था, लेकिन उस वक्त मैं इस लायक नहीं था कि कोई काम अंजाम दे सकता। एक्सीडेन्ट से आज भी मेरा एक हाथ पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ, मुझे नई जिन्दगी आपलोगों की दुआओं से मिली है। मैं अपने बुजुर्ग मरहूम अब्बुल हसन मंसूरी साहब के अहसानों को कभी नहीं भूल सकता और उनके किये हुए कामों को कभी नहीं भुलाया जा सकता। जनाब अनीस मंसूरी नें रवीउल्ला मंसूरी को कानपुर मण्डल का सदर बनाते हुए खुशी का इज़हार किया और कहा कि अब हम दो नहीं बल्कि एक और एक ग्यारह हो गये हैं।

इस मौके पर आपने जनाब शाकिर मंसूरी नायब सदर उ.प्र. तंजीम का शुक्रिया अदा किया जिन्होंने नये चेहरों से समाज की मुलाकात कराई, मैं शब्बीर मंसूरी साहब का एहसानमंद हूँ कि मुझेइस दर से हमेशा कामयाबी हासिल हुई है। मेरे साथ काम करने वालों को मैं यकीन दिलाता हूँ कि उनका कोई हक नही मारा जायेगा। साथ ही उनसे मेरी एक गुजारिश है कि तंजीम का ये फाउण्डेशन का वक्त है, हम और आप मिल कर जितनी मज़बूत नीव रखेंगे उतनी अच्छी इमारत तामीर होगी। मैं काफी दिनों से एक बड़ी रैली लखनऊ में करने की सोच रहा हूँ, लेकिन अब कानपुर से हमें बड़ी हिम्मत मिली है।

प्रोग्राम के आखिर में रवीउल्ला मंसूरी कानपुरी को मण्डल सदर बनाये जाने की खुशी में आये हुए हज़रात ने गुलपोशी की और मुबारकबाद दिया। जलसे में शिर्कत करने वाले हज़रात जनाब हाजी बदरूद्दीन मंसूरी, हाजी कदीर मंसूरी, हाजी हबीबुर्रहमान मंसूरी, हाजी इस्माईल मंसूरी, सिद्दीक मंसूरी, मास्टर रज्ज़ाक मंसूरी, इंसाफ अली मंसूरी, यारमोहम्मद मंसूरी, इस्लाम मंसूरी, दीनमोहम्मद मंसूरी, मजीद मंसूरी, रसीद मंसूरी, मेंहदी हसन मंसूरी, सुल्तान रसीद मंसूरी और बब्लू मंसूरी के अलावा कसीर तादाद में दीगर हाज़रीन मौजूद थे।

हाजी रवीउल्ला मंसूरी के कानपुर मण्डल सदर चुने जाने के सिलसिले में 2 जुलाई 08 को 91/84, दलेलपुरवा, कानपुर में इस्तकबालिया प्रोग्राम मुनक्किद हुआ, जिसमें शहर कानपुर और अतराफ के लोगों ने शामिल होकर मण्डल सदर को मुबारकबाद पेश की। खानदाने मंसूरी पैगाम लखनऊ और बिरादराने मंसूर ने चुने गये मण्डल सदर को मुबारकबाद पेश करते हुए उनकी कामयाबी और तरक्की के लिए दुआ करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

A.I.J.M.S. का जिला इज्लास

हक छीनने की ताकत इज्तिमाईयत में है हुकूक हासिल करने के लिए दूसरी बिरादरियों से सबक हासिल करो, तालीम सभी तालों की एक मास्टर कुँजी है। मज़बूत समाज को बनाने के लिए मंहगी शादियों से परहेज़ करें। बरेली मण्डल, उ.प्र. की तंज़ीमी दौड़ में सबसे आगे।

अनीस मंसूरी ख़िताब करते हुए

पीलीभीत- मंसूरी पैग़ाम नामानिगार मो0 शाहिद मंसूरी शाहजहांपुर से मिली जानकारी के मुताबिक आल इण्डिया जमीयतुल मंसूरी सोसाइटी का इजलास पीलीभीत के गांधी स्टेडियम (प्रेक्षागृह) में जनाब अनीस मंसूरी लखनऊ मेहमान-ए-खुसूसी और सदारत जनाब सरताज मंसूरी मण्डल अध्यक्ष बरेली नें की और सरपरस्ती का काम अंजाम दिया जनाब अंजुम अली मंसूरी नें।

अवाम को खिताब करते हुए मेहमान-ए-खुसूसी नें कहा कि हक मांगने से नहीं मिला करते हैं, बल्कि हक़ आगे बढ़कर हासिल किये जाते हैं और यह हक़ एक दो लोग मिलकर नहीं पा सकते इसके लिए पूरे मंसूरी समाज को एक जुट होकर कोशिश करनी होगी। आपने एकता पर बल देते हुए कहा कि प्रजातंत्र में प्रदर्शन करने से ही सियासी फायदा मिल सकता है। मंसूरी साहब नें आगे कहा आज सभी बिरादरियां एकजुट हो गई हैं और इन बिरादरियों नें कामयाबी भी हासिल कर ली है। ऐसे वक्त में इस दबे-कुचले मंसूरी समाज को भी मुत्तहिद होना होगा वरना यह समाज, समाज की मुख्य धारा से पिछड़ जायेगा और पस्ती की तरफ चला जायेगा। इसलिए हमें सोचना होगा कि समाज की तरक्की का रास्ता एकता में है और जब हम एकजुट होंगे तो सभी राजनैतिक पार्टियां हमारी जरूरत को महसूस करेंगी और हमारी पहचान पूरे मुल्क में होगी।

तालीम की जरूरत को बताते हुए जनाब अनीस मंसूरी साहब नें कहा कि तालीम हासिल करना हर मर्द-औरत के लिए लाजिमी है। बग़ैर तालीम के कोई भी कौम तरक्की नहीं कर सकती और न किसी मंजिल पर पहुँच सकती। इल्म की रोशनी से रूह रोशन होती है, किस्मत चमकती है और कौमों को जीने का सलीका मिलता है। हकीकत तो यह है कि तालीम हासिल करके आदमी इंसान बन जाता है इसलिए मंसूरी समाज अपने नौनिहालों को आला से आला तालीम दिलाने की कोशिश करें, उनकी जिहालत का अंधेरा इल्म की रोशनी से ही दूर होता है। मेहमान-ए-खुसूसी नें शादियों में बढ़ते हुए जहेज़ पर अफसोस ज़ाहिर करते हुए कहा कि आज गरीबों की बेटियों की शादिया होना निहायत ही मुश्किल काम हो गया है। समाज को जहेज़ जैसी लानत को बन्द करने के लिए कोशिश करनी चाहिए और ज्यादा से ज्यादा शादियां इज्तिमाई तरीके से अमल में लाने की जरूरत है, जिससे फिजूल खर्ची रोकी जा सके और सभी अमीर-गरीब बेटियों का निकाह इज्जत के साथ आसानी से हो सके।

जनाब मो0 सरताज मंसूरी सभा अध्यक्ष नें कहा कि दो साल पहले तक मंसूरी समाज की रहनुमाई करने वाला एक भी नेता मौजूद नहीं था लेकिन आज अल्लाह का शुक्र है कि उसने

बायें से जनाब अंजुम मंसूरी, अनीस मंसूरी जिला सदर मेहमान-ए-खुसूसी अनीस मंसूरी लखनऊ का इस्तकबाल करते हुए साथ में शरीफ मंसूरी मण्डल सदर लखनऊ व सरताज मंसूरी मण्डल सदर बरेली

कौम-ए-मंसूर में अनीस मंसूरी जैसा मर्द-ए-मुजाहिद अता किया है। जिसनें गांव-गांव, शहर-शहर बैठकें करके मंसूरी समाज को बेदार करके मुत्तहिद करने का काम किया है। उसी का नतीजा है कि आज उ. प्र. में मंसूरी समाज एक प्लेटफार्म पर खड़ा है और इंशाअल्लाह वह दिन दूर नहीं जब राजनीति में भी हमारी हिस्सेदारी होगी और नौकरियों में भी हमें आला मकाम मिलेगा। आपने आगे कहा कि हमें आपसी मतभेद भुलाकर एक दूसरे को गले लगा लेना चाहिए ताकि समाज में एक नई चेतना का उदय हो।

जलसे के सरपरस्त जनाब अंजुम मंसूरी नें संगठन की मज़बूती पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि अगर आपका संगठन मज़बूत है तो आप भी ताकतवर हैं।

सभा को जनाब असगर अली मंसूरी जिला प्रभारी बसपा, कुशीनगर ने भी सम्बोधित किया।

मंच की तशरीफ आवरी में जनाब शरीफ मंसूरी लखनऊ मण्डल अध्यक्ष, अब्दुल जब्बार मंसूरी कलकत्ता, इकराम मंसूरी व शाकिर मंसूरी प्रदेश उपाध्यक्ष, मुख्तार मंसूरी प्रदेश सचिव, इस्लाम परवेज मंसूरी थे।

प्रदेश अध्यक्ष व मण्डल अध्यक्ष को अमामा बांधकर खैरमकदम किया गया। प्रोग्राम के आखिर में प्रदेश अध्यक्ष को प्रतीक चिन्ह दिया गया व शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

सम्मेलन में मो0 अजीम मंसूरी (आतिशबाज़), अखलाक मंसूरी, बन्ने मंसूरी, मुस्तकीम मंसूरी, मंजूर मंसूरी, डा0 जीलानी मंसूरी, ग्यासउद्दीन मंसूरी, इरफान मंसूरी, डा0 रईस मंसूरी, हाजी उसमान मंसूरी, ज़ाहिद मंसूरी, गनी मंसूरी, रज़ी मंसूरी, कारी निजामुद्दीन मंसूरी, मुख्तार मंसूरी प्रधान, इसरार मंसूरी, मेंहदी हसन मंसूरी, वसीउल्ला मंसूरी, बली मंसूरी, डा0 अनवार मंसूरी, अलाउद्दीन मंसूरी सभाषद, अब्दुल ग़नी मंसूरी, इंतिजार मंसूरी, इब्राहिम मंसूरी, आबिद मंसूरी, सुल्तान मंसूरी, हाजी फुरकान मंसूरी व तमाम लोगों नें शिर्कत की।

प्रोग्राम का संचालन जनाब अलीम मंसूरी एडवोकेट ने किया व शुरूवात तिलावत-ए-कुरआन से की गई।

पीलीभीत पहुँचने से पहले सुबह 9 बजे प्रदेश अध्यक्ष नें प्रदेश स्तरीय पदाधिकारियों सहित शाहजहांपुर पहुँचे जहां बरेली मण्डल अध्यक्ष ने इन सभी लोगों का इस्तकबाल किया। बीती रात से ही रिम-झिम बरसात हो रही थी, ऐसा लगता था कि यह बारिश भी सदर का इस्तकबाल कर रही है।

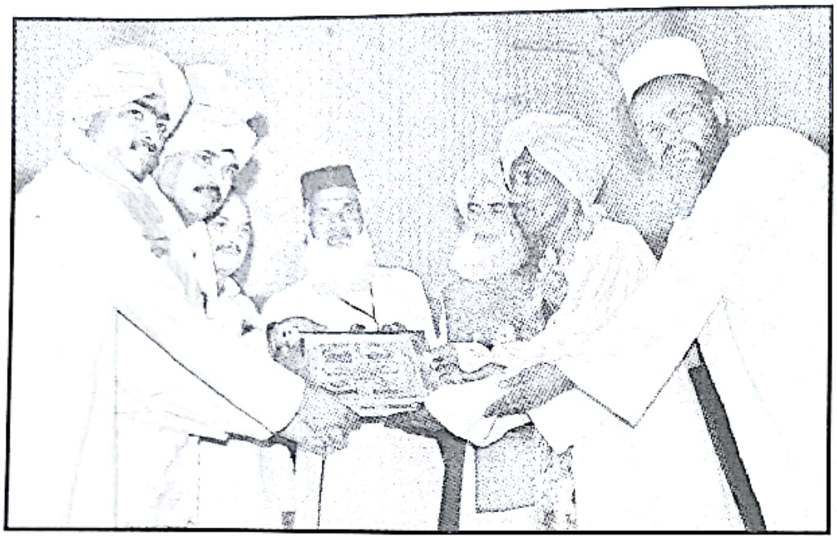

जहां एक तरफ मंसूरी समाज के लोग अपने मुखिया पर फूलों की बारिश कर रहे थे वहीं आसमान भी उन फूलों की पंखुड़ियों पर शबनम बिखेरने का काम कर रहा था, शिद्दत की गर्मी को हटा कर एक सुनहरा मौसम नें आने वालों का खैरमकदम किया।

शाहजहांपुर से प्रदेश अध्यक्ष के काफिले के साथ मण्डल अध्यक्ष की टीम भी हो गई। बारिश लगातार काफिले का इस्तकबाल कर रही थी, मगर बुलंद हौसले का मालिक अनीस अपने समाज से रूबरू होने के लिए लगातार आगे बढ़ रहे थे। जनपद बरेली की तहसील फरीदपुर में सड़क के किनारे मंसूरी समाज जिन्दाबाद के नारे लगाये जा रहे थे। गाड़ियों का काफिला रूकते ही प्रदेश अध्यक्ष को फूलों से लाद दिया गया। अब फरीदपुर के लोग भी काफिले में शमिल हो गये, इसके बाद नरियाबल में उण्डला और नकटिया के मंसूरी समाज के लोगों नें टेण्ट लगाकर भारी भीड़ के साथ सूबाई सदर का इस्तकबाल किया। यहाँ सूबाई सदर नें मंसूरी समाज को एक जुट होकर काम करने की ताईद छोटे से खिताब में की। नरियाबल से बरेली की पूरी टीम अपनी-अपनी गाड़ियों से सदर के काफिले में शामिल हो गईं।

अगला पड़ाव पवन बिहार बरेली में श्री वीरेन्द्र सिंह विधायक बसपा के कार्यालय पर हुआ, जहां से विधायक जी नें हरी झंडी दिखाकर अनीस मंसूरी के काफिले को पीलीभीत के लिए रवाना किया। पीलीभीत रोड पर पिरभोंडा, रिठौरा, नवाबगंज, नौगवां में मंसूरी समाज नें भारी भीड़ के साथ सदर का इस्तकबाल किया। बारिश और हवाओं को चीरता हुआ ये काफिला दोपहर दो बजे पीलीभीत के गांधी स्टेडियम प्रेक्षागृह पहुंचा, जहां का जनसैलाब अपने मुखिया के रूबरू होने के लिए सुबह से ही आंखे बिछाय बैठा था। फिजाओं में अनीस मंसूरी जिन्दाबाद के नारे गूँज रहे थे, वे इस बात की शहादत दे रहे थे कि सूबे के मंसूरी समाज नें जनाब अनीस साहब को अपना नेता तसलीम कर लिया है और उनकी आवाज पर लब्बैक कह रहा है।

सूबाई सदर के स्टेज पर तशरीफ लाने के बाद तमाम ओहदेदारों को बैच लगाकर इस्तकबाल किया गया और तालियों की गूंज के बीच गुलपोशी की गई।

जैसे ही गुलपोशी की रस्म खत्म हुई मंसूरी बिरादरी के मशहूर आतिशबाज मो. अजीम मंसूरी ने अपनी खास पेशकश आतिशबाजी के जरिये पूरे स्टेज पर हवा में फूलों की पंखुड़िया बिखेर दीं। इस नजारे में मौजूद तमाम हज़रात को अपनी जानिब मुखातिब किया।

पीलीभीत इज्लास में चुने गये ओहदेदारान-

जनाब रहमतुल्ला मंसूरी	- सरपरस्त
जनाब अनीस मंसूरी	- जिला सदर
जनाब अलीम मंसूरी	- जनरल सेक्रेट्री
जनाब माजिद मंसूरी	- नगर सदर
जनाब अशरफ मंसूरी	- नगर जनरल सेक्रेट्री
जनाब मोहम्मद मियां	- तहसील सदर
जनाब कदीर मंसूरी	- तहसील सेक्रेट्री
जनाब जाबिर मंसूरी	- तहसील बीसलपुर सदर
जनाब सलीम मंसूरी	- तहसी. बीसलपुर सेक्रेट्री
जनाब इकराम मंसूरी	- पूरनपुर सदर
जनाब इकबाल मंसूरी	- पूरनपुर जनरल सेक्रेट्री

Scanned with OKEN Scanner

बाकी पेज 18 का

की। आज कहा जाता है कि तालीम बड़ी मंहगी है। पसमांदा तबका के लोग बच्चों को अच्छी तालीम नहीं दिला पा रहे हैं। यह सच है कि तालीम मंहगी है लेकिन इसका मतलब यह बिलकुल नहीं है कि बच्चे तालीम नहीं पा रहे हैं, लेकिन हम सच्चाई का दूसरा रूख अनदेखी कर देते हैं। अपनी मेहनत और गाड़ी कमाई के पैसों को ऐशो-आराम, फिंजूलखर्ची, मंहगी शादियां और जहेज़ के दिखावे पर तमाम बेजा खर्च करते हैं। इसके अलावा सामाजिक बुराईयां हमारा पीछा नहीं छोड़ रहीं है और हमें बहाने बनाने का मौका दे रहीं हैं कि मेरे पास तालीम के लिए पैसे नहीं हैं। याद रखिये हमें अगर बच्चों को अच्छी तालीम डाक्टर, इंजीनियर या और ऊँचे ओहदों पर भेजना है तो अपने फिजूल के खर्चों को रोक कर और आधे पेट खा कर बच्चों की तालीमी जरूरियात को पूरा किया जा सकता है। अगर हमने गौरो-फिक्र न की तो बच्चों की जिन्दगी तो तबाह होगी ही पूरा मंसूरी समाज गुर्बत और नाकामी का शिकार हो जायेगा।

विधायक आली जनाब मोहम्मद ग़ाजी, अफजलगढ़

तरक्की का दूसरा रूख जो हमें आगे बढ़ने से रोक रहा है वह है संगठन की कमी, हम भाई की तरक्की देखना पसंद नहीं करते, उसकी टांग खींचने में अपनी वाह-वाही समझते हैं। आला तालीम, आला सियासत और बेहतर माली हालात खुदा की नियामतों को पा लेने के बाद मंसूरी समाज के साथ उठने बैठने को अपनी तौहीन समझते हैं। हम न समाज की भलाई का काम करते हैं और न करने देते हैं। अगर समाज का यही हाल रहा तो हम मआसरे में कभी अच्छा मकाम हासिल नहीं कर सकेंगे। अगर हम अपने हुकूक हासिल करना चाहते हैं तो एक जुट होकर अपनी ताकत का प्रदर्शन करना होगा तभी हुकूमत और सियासी पार्टियां हमारे हुकूक देने पर राज़ी होंगी।

तीसरा मरहला अपनी सामाजिक पहचान के साथ हुकूक हासिल करने के लिए जद्दो जहद का है। आज कोई आपकी मदद करने को सामने नहीं आता। जब तक आप अपनी ताकत का इज़हार न करें। "अल्लाह ने उस कौम की हालत नहीं बदली, न हो जिसको ख्याल आप अपनी हालत बदलने का" आप आगे बढ़ें और परचम अपने हाथ में थामें। संगठित होकर अपने हुकूक छीनने की ताकत पैदा करें इंशाअल्लाह आप कामयाब हो जायेंगे।

जलसे में शिर्कत करने वाले हज़रात जनाब डाक्टर फहीम मंसूरी, मुबारक हुसैन, मा. सरजीत सिंह जिला सदर बी.एस.पी., महमूद अहमद जाफरी मंसूरी प्रेस अमर उजाला, नसीम सलमानी, मुंशी शकील अहमद, नफीस अहमद एडवोकेट, खुर्शीद, तारिक मंसूरी, इस्लामुद्दीन, नफीस अहमद मंसूरी, महमूद आलम मंसूरी व दीगर हज़रात।

समीक्षा बैठकें

काफिला लखनऊ से धामपुर कांफ्रेंस के लिए रवाना हुआ, रास्ते में शाहजहांपुर, बरेली, मुरादाबाद और कई जगह समीक्षा बैठकें मुनक्किद की गईं। सबसे पहली समीक्षा बैठक जिला तंजीम शाहजहांपुर मोहल्ला बाडूजइ में दोपहर 11 बजे मुनक्किद हुई। जिला तंजीम के तमाम ओहदेदारान अपने सदर जनाब अनवार मंसूरी की जेरे निगरानी ए.आई.जे.एम.एस. के सदर जनाब अनीस मंसूरी के

इस्तकबाल में शहर के बाहर सैकड़ों की तादाद में गुलपोशी के लिए पहुँचे। मोहल्ला बाडूजइ पहुंचकर सदर नें समीक्षा बैठक में देहात के लोगों को ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ने और मेम्बरसाज़ी बढ़ाने पर जोर दिया। बरेली मण्डल के सदर जनाब सरताज मंसूरी ने बताया कि मण्डल की तंजीम में सिर्फ बदायुं जिला छोड़कर सभी जिलों की तंजीमें काम कर रहीं हैं। समीक्षा के बाद काफिला को फतेहगंज पूर्वी पूर्व चेयरमैन जनाब शब्बीर मंसूरी नें रोक कर गुलपोशी से इस्तकबाल किया और इलाके की समीक्षा पर गौर-फिक्र किया गया। काफिला आगे चलकर जमायतुल रजा पहुंचा। इस इदारे के प्रिंसिपल जनाब ए.आर. नस्तर फारुकी नें अपने साथियों के साथ जनाब मंसूरी साहब का इस्तकबाल किया और तमाम कालेज की बिल्डिंग का मुआइना कराया। जनाब मंसूरी साहब नें खुशी का इज़हार करते हुए फारूकी साहब की ज़ेरे निगरानी कालेज की कामयाबी के लिए दुआ की।

विधायक अली जनाब अशोक कुमार राणां, धामपुर

काफिले का अगला पड़ाव मुरादाबाद जिला तंजीम की समीक्षा बैठक मुगलपुरा अव्वल जनाब जाहिद हुसैन मंसूरी के दौलतखाने पर मुनक्किद हुई। जिसमें खुसूसी तौर से जिले के तमाम हज़रात ने शिर्कत की और अपने तमाम मसाइल सदर के सामने पेश किये। सदर नें उन सभी का तसल्लीवक्स जवाब देते हुए अगली कार्यकर्दगी के लिए तमाम हिदायतें दीं। रात के खाने के बाद मुराबाद में स्टे रहा।

सुबह काफिला नई तवानाई के साथ धामपुर पहुंचा। शहर के बाहर सैकड़ों लोगों ने तंजीम के चार सफेद और पांच नीली धारियों वाले झण्डों के साथ काफीले का इस्तकबाल किया।

काफिला यहां से जुलूस की शक्ल में पी.डब्लू.डी. गेस्ट हाउस पहुंचा, जहां पहले से मो0 गाज़ी विधायक और जनाब अशोक कुमार जी राणा विधायक, सदर तंजीम अनीस मंसूरी से मुलाकात के लिए मौजूद थे। गेस्ट हाउस पहुंचकर पत्रकारों नें जनाब मंसूरी साहब के दौरे का हवाला और समाज की कार्यकर्दगी पर कई सवाल पूछे। नाश्ते के बाद काफिला जलसागाह की तरफ गामज़न हुआ। यहां मौजूद हजारों लोगों ने बुलन्द आवाज में अनीस मंसूरी जिन्दाबाद और मंसूरी समाज जिन्दाबाद के नारे लगाये और इस्तकबाल किया।

वापसी में सदर का इस्तकबाल मुरादाबाद में जनाब शकील मंसूरी नें अपने दौलतखाने पर करते हुए कहा कि मुझे बेहद खुशी हो रही है कि हमारे समाज का भी कोई नेता है जो समाज के दुःख-दर्द को बांटने के लिए अपना वक्त और पैसा खर्च कर रहा है। मुरादाबाद के बाद अगला पड़ाव मिलक धामपुर में मंसूरी मेडिकल स्टोर पर रहा। यहां कस्बे के सैकड़ों हज़रात नें इकट्ठा होकर सदर का गर्मजोशी से इस्तकबाल किया। सदर नें तंजीमी कार्यकर्ददगी पर रोशनी डालते हुए खास तौर से देहात के लोगों को जोड़ने के लिए हिदायतें दीं और कहा कि मंसूरी समाज देहातों में बसता है, जहां न तालीम है और न कारोबार, इनको आगे बढ़ाने की जरूरत है।

धामपुर जिला बिजनौर कान्फ्रें को कामयाब बनाने के लिए कई बसें जिला और बैरूनी जिला से आईं। नजीबाबाद के साहनपुर से मंसूरी समाज के लोग बस से जाते हुए वहां के विधायक जनाब शीशराम जी नें झंडी दिखाकर बस को रवाना किया।

Scanned with OKEN Scanner

जिला पीलीभीत में स्टेज पर बैठे हुए ओहदेदारान

हाल में बैठे हाज़रीन

न्योतिनी जिला उन्नाव में बैठे मंसूरी समाज

Scanned with OKEN Scanner

धामपुर जिला बिजनौर कान्फ्रेन्स में कौमी सहायता के लिए खुर्शीद मंसूरी को, अध्यक्ष अनीस मंसूरी लिफाफा देते हुए, हाल का मन्ज़र

न्योतनी जिला उन्नाव के जिम्मेदारान के साथ अध्यक्ष अनीस मंसूरी

बाकी पेज 8 का

कारोबार के लिए विकास प्राधिकरण, नगर निगम, नगर पालिका द्वारा निर्मित दुकानों में
11. अतिपिछड़े मंसूरी समाज का आरक्षण की मांग।
तालिबइल्मों को वजीफे का बंदोबस्त की मांग।
12. कारोबार के लिए 50 करोड़ रूपये का बंदोवस्त सस्ते ब्याज दरों पर किया जाये।
13. रूई व तेल के कारोबार के लिए 50 हजार रूपये का अनुदान की मांग
14. प्रदेश की स्पीनिग मिल के वेस्ट कॉटन को 25 प्रतिशत छूट पर उपलब्ध कराया जाये।
15. सामाजिक संस्थान के उत्थान हेतु 50 करोड़ रूपये का अनुदान दिलाया जाये।
16.

आली जनाब गुल मोहम्मद मंसूरी पूर्व विधायक जयपुर नें अवाम को खिताब करते हुए कहा कि सन् 1979 में सबसे पहला इज्तिमाई शादी सम्मेलन राजस्थान में हाड़ोती, जिला- कोटा, कस्बा-छीपाबड़ोत में मरहूम हाजी अब्दुल रहमान मंसूरी की कयादत में मुनक्किद हुआ था। इसके बाद इज्तिमाई शादियों का एक लम्बा सिलसिला शुरू हुआ। 1983 में 23 जोड़े, 1988 में 33 जोड़े और 1991 में 91 जोड़ों का निकाह डिग्गी में हुआ और 2001, 18 जून को इसी कर्बला मैदान में 70 जोड़ों का निकाह मुनक्किद हुआ था, जिसे मुख्यमंत्री आली जनाब अशोक गहलोत नें खिताब कर निकाह की रस्म में बंधे जोड़ों को मुबारकबाद दी थी।

जनाब अंजुम अली मंसूरी, बरेली

जिसकी निजामत जनाब हाजी अब्दुल अजीज मंसूरी आमेर, जयपुर के मज़बूत कंधों पर थी। जिसे लगभग एक लाख लोगों ने हिस्सा लेकर कामयाब बनाया था।

जल्से के इफ्तिताम की इत्तिला देते हुए आली जनाब अब्दुल लतीफ मंसूरी आरको साहब नें कहा कि मुझे अफसोस है कि इस तपती धूप में आपकी राहत का माकूल इंतिज़ाम नहीं किया जा सका। हमारी तंज़ीम जो भी खिदमत कर सकी और जो कमी रह गई उसके लिए मुआफी की उम्मीद रखता हूँ और तमाम आने वाले लोगों को मुबारकबाद पेश करता हूँ। सम्मेलन में शरीक होकर आप सब ने मेरा जो हौसला बढ़ाया, हाज़रीन में खास तौर से मैं उन लोगों का शुक्रगुजार हूँ जिनहोनें अपने बेटे-बेटियों के निकाह के लिए पेश किये और इस खुशी को दोबाला कर दिया। मैं इस उम्मीद के साथ आपको विदा कर रहा हूँ कि अगले साल 2009 में हमारा सम्मेलन इसी मकाम पर मुनक्किद होगा। आप ज्यादा से ज्यादा जोड़ों के साथ हाजिर होकर खिदमत का मौका दें।

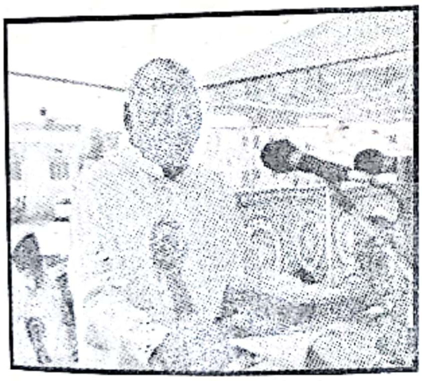

जनाब सरताज़ मंसूरी, शाहजहांपुर

Regd.- U.P.K.B.I.
हकीम बाबा मुमताज शाह का जड़ी बूटियों से बना दर्दनाशक
Ringnis Oil
बदन दर्द, जोड़ों का दर्द, बच्चों या बड़ों को सर्दी, फीलपांव, फायलेरिया, घंघा, खुजली (खरी), मस्से वाले बवासीर (साटिका), गठिया बाई (बयार), वगैरह के लिये रामवाण का काम करता है।
बाबा जड़ी-बूटी औषधि निर्माण
पोस्ट बाक्स- बड़ा गाँव, डिस्टिक- गोण्डा उ.प्र.

बाकी पेज 14 का

को मुबारकवाद पेश करते हुए, दुआ करता हूँ कि विरादराने मंसूर को समझ अता करे ताकि वे अपने जिम्मेवारियों को महसूस करें और कौम की डगमगाती हुई नाव को किनारे लगाने में हमारी मदद करें। चूंकि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता हमें आप सबकी मदद की जरूरत है। मैं गॉव का रहने वाला हूँ और गॉव से ही हमने कौमी बेदारी की मुहिम शुरू की है।

मैं बी0एस0पी0 से जुड़ा हूँ और आप लोगों से भी यही उम्मीद करता हूँ कि अगले चुनाव में बहन मायावती को कामयाब बनाने में पार्टी की मदद करें। हम जब तक किसी एक राजनैतिक दल के होकर नहीं रहेंगे तब तक हमें हुकूमत से कुछ भी मिलने वाला नहीं है। मैं तालीमयाफ्ता और ज़िम्मेदार हज़रात से दरख्वास्त करता हूँ कि आप अपनी जाति को छुपाये बिना पहचान कायम करें, ताकि सियासत और समाज में मंसूरी समाज की पहचान हो। आपके दबदबे से कबीलाये मंसूर की इज्जत और हिफाजत हो, कौमी खिदमत अंजाम देने वाले हजरात की रैहवरी करें ताकि आपको और हमें शर्मिंदा न होना पड़े। कुछ मशवरों पर गौर करें और अमल करें।

अपने को छिपाकर आप क्या चाहते हैं ? दीन के बागी, कबीले को धोखा, वालदैन और खुद को शर्मिंदा, कबीले के साथ जुल्म या इज्जतोवकार की जिन्दगी-

1. क्या अल्लाह के बागी होना चाहते हैं?0

क्योंकि अल्लाह नें कबीले तुम्हारी पहचान के लिए बनाये हैं अफजलियत के लिए नहीं। आप पहचान छिपा कर अपने को अफजल बताना चाहते हैं। अगर हां तो यकीनन आप अल्लाह के दीन के बागी हैं।

2. क्या मंसूरी कबीले को धोखा देना चाहते हैं?

जिस खून और रिश्ते से आपका वजूद अमल में आया है उसे छिपाना कहां तक जायज़ है। वालदैन नें अपना और आपके भाई बहनों का हक मारकर, क्या तालीम और इज्जत का मकाम इसी लिए दिलाया था।

3. क्या वालदैन को शर्मिंदा कराना चाहते हैं ?

समाज में वालदैन को मंसूरी कबीले के नाम से पहचाना जाता है। जब लोग वालदैन से पूछेंगे कि तुम्हारे बेटे का कबीला क्या है तब वे क्या जवाब देंगे।

4. क्या आला मकाम पर पहुंचने के बाद शर्मिंदा होना चाहोंगे?

आला मकाम पर पहुंचने के बाद जब कभी आपके कबीले के बारे में पूछा जायेगा तो आप झूठ बोलेंगे, बाहने बनायेंगे और शर्मिंदा होंगे। लोगों को पीट पीछे आपकी गीबत का मौका मिलेगा।

5. क्या कबील-ए-मंसूर पर जुल्म कराना चाहते हो?

जब कबीले के तालीमयाफ्ता और ताकतवर हज़रात अपने को छिपा लेंगे उस वक्त दुनिया इस कौम को कमज़ोर समझ कर आपके भाई-बहन और खूनी रिश्तों पर जुल्म करेंगे जैसा कि भाई इमरान मंसूरी जिला आजमगढ़, कस्बा- इसहाकपुर के कत्ल की सिर्फ यही वजह थी और बहन मुबीना ग्राम-सूपा जिला-महोबा में 21 मई 2006 की रात आपके रिश्ते की बहन को गुण्डों नें अगवा कर इज्तिमाई आबरूरेज़ी की और जिस्म के टुकड़े-टुकड़े करके नदी में फेक दिया। क्या आप अपनी बहन-बेटियों की आबरू नहीं बचाना चाहेंगे।

6. क्या कबीले को अंधेरी कोठरी में

ढ़केल कर आप इज्जत चाहते हैं?

नामुमकिन, वालदैन, खानदान और कबीले के लोग बेइज्जत हों तो अल्लाह भी एक मुकर्रर वक्त तक छूट देता है। दुनिया भले ही इज्जत दे दे लेकिन लम्बे वक्त में आपको कोफ्त और शर्मिंदगी, नाकामी के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा।

7. क्या आपकी गलत सोच से बच्चे निजात पायेंगे?

हरगिज नहीं, आपकी तो गुज़र जायेगी लेकिन आने वाली औलाद से जब कबीले की पहचान पूछी जायेगी तो वे सर झुका लेंगे। वे वालदैन, कौमी रहनुमाओं और अपने को अफजल समझने वाले हज़रात के बारे में क्या सोच बनायेंगे।

8. क्या कबीले के साथ रह कर इज्जत, दीन और दुनिया चाहते हो?

दीन में छोटे-बड़े का कोई मकाम नहीं कबीले को मत छुपाओं, एहसा-ए-कमतरी के शिकार मत बनो, इज्जत मिलेगी और तालीम हासिल करो, तो कामयाब हो जाओगे।

ज़रा सोचिये और इन उनमान पर अपनी राय का खुलासा कीजिए।

नज़्म– इज्तिमाई शादियां

जनाब मास्टर मौला बख़्श मंसूरी, राठ, महोबा

आज तारीखी सरजमीं महोबा में इज्तिमाई शादी जश्न मनाया जा रहा।
मंसूरी समाज के जरिये 17 जोड़ों का निकाह कराया जा रहा।।
कौमे मंसूर को फिजूलखर्ची पर रोक लगाने से चेताया जा रहा।
बचे हुए धन से अपने बच्चों को आला तालीम का पाठ पढ़ाया जा रहा।।
सभी बुराईयां फिजूलखर्ची से बचने का मरकज है इज्तिमाई शादियां।
एक बैनर तले हों निकाह न हो समाज में पैसे की बर्बादियाँ।।
शादी हो बिल्कुल सादी जिसमें न हो वक्त और दौलत की बर्बादी।
दूल्हा-दुल्हन को आपस में हो, हमसफर चुनने की पूरी आजादी।।
इज्तिमाई शादियों में दूल्हा-दुल्हन को दे रहे हम मुबारकवाद।
दूल्हे ने निकाह में किये जो, वायदे उन्हें ताजिन्दगी निभायें।।
कभी न कोई गमगीन हो, ताजिन्दगी खुशियों की बहार आये।
बीबी भी अपने शौहर की कभी, जिन्दगी में करे न नाफर्मानी।।
ताजिन्दगी खुशियां ही खुशियां, होंगी न जीवन में आये परेशानी।
अनीस मंसूरी सदर क़ी आवाज, पर लब्बेक का नारा करो बुलन्द।।
आल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसायटी, के पर्चम तले हो जाओ समागम।
मौला इज्तिमाई शादियों में शरीक, सभी मेहमानों का करते हम इस्तकबाल।।
न कोई चीज है पास हमारे, अख्लाक-ओ-मुहब्बत से पहना रहे गुलमाल।

अपनी ताकत पहचानो

फिरे उम्रभर लेकिन वहीं के वहीं हैं।
ये मंसूरी भी किसी से कम नहीं हैं।।

अय्यूब मंसूरी
कस्बा-मकराना, नागौर

हमारा समाज गैर सरई रस्मों-रिवाज को अमल में लाने के लिए तरह-तरह के बहाने ढूंढ़ता है कहीं घर वालों का, कहीं रिश्तेदारों का और कहीं समाज के डर का, अगर इसे डर नहीं है तो सिर्फ अल्लाह का। आला दर्जे के मुसलमानों नक्ल करने में हुजूर सल्ल. की चाहे जितनी सुन्नतें पामाल हो जायें, लेकिन इसकी कोई परवाह नहीं, इस पर हम मुसलमान होने और हुजूर की मोहब्बत के झूठे दावे करते हैं।

जी हां ! यह एक सच्चाई हमारे मंसूरी समाज की है, आज हर समाज अपनी तरक्की के लिए समाज में फैली हुई वेजा रस्मों को मिटाने में लगा है लेकिन मंसूरी समाज उन बुराईयों को फरोग देने में वक्त और पैसे को बर्बाद कर रहा है। आज हर समाज तेरहवीं, चालीसवां की फातहा को करने से गुरेज कर रहे हैं, समाज का सबसे पसमांदा तबका जिसे दुनिया छूना भी पसंद नहीं करती थी उन्होंने गलत रस्मोरिवाज को खत्म करके एक आला मकाम हासिल कर लिया है, लेकिन एक हम हैं कि उसे छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहे और दलील देते हैं कि हमें अपने बुजुर्गों से मोहब्बत है। तो फिर हम उनकी फातहा क्यों न करें, अगर मोहब्बत की बात की जाये तो नबी-ए-करीम सल्ल. को अपने बेटे-बेटियां, सहाब-ए-कराम से मोहब्बत नहीं थी? क्या उन्होंने उनमें से किसी के चालीसवें की फातहा की थी, नहीं, क्योंकि जो काम शरियत में है ही नहीं वे काम नबी-ए-करीम सल्ल. कैसे कर सकते, लेकिन हमें इसकी कोई फिक्र नहीं, कि नबी-ए-करीम सल्ल. ने अपनी जिन्दगी कैसे गुजारी, हमें तो सिर्फ एक ही फिक्र है कि अगर हम चालीसवें की फातहा नहीं करेंगे तो बिरादरी में हमारी नाक कट जायेगी।

मेरे भाईयों फिजूल खर्ची से बचो, अगर अल्लाह नें आपको दौलत से नवाजा है तो उसने दौलत का हिसाब लेने का भी वायदा किया है, कि

टेलरिंग की दुनिया का चमकता सितारा

Ph.: 0551-2345785

New Nice Tailors

स्पेशलिस्ट :

सूट-सफारीसूट-शेरवानी-पेन्ट-शर्ट

गीता प्रेस रोड, गोरखपुर

3 प्रो. मो. सुलेमान मंसूरी Mo.: 9936719533

Mo.: 9335131166

मंसूरी शकील भाई

एक्सपोर्ट क्वालिटी

सूजी से बनी हुई स्टेन्डर्ड सेवई

दिलीप सेवई

निर्माता : दिलीप सेवई भण्डार

57

Ph.: 2659059

एक्सपोर्ट क्वालिटी

हर खुशी के मौके पर

हिन्द सेवई

पैसा कहां से कमाया और कहां खर्च किया। आप इस दौलत को बिरादरी पर खूब खर्च करो, स्कूल बनाओ, मस्जिदे तामीर कराओ, गरीब और बेवा की बेटियों की शादियों पर खर्च करो इससे बढ़कर कोई सवाब नहीं है। अगर आपके बनाये गये तालीमी इदारों से बच्चे पढ़कर डाक्टर, इंजीनियर, वकील और कलेक्टर बनेंगे तो पूरी बिरादरी में आपका नाम होगा। अच्छे खानदानों से रिश्ते मिलेंगे और अल्लाह भी इसका अज़ देगा। ऐ मेरी बिरादरी के लोगों जागो! जैसा कि कुरआन शरीफ में है कि जगाने वाले के लिए एक आवाज काफी है, मुर्दों को जगाने के लिए सूर: फील का इंतिजार करो और देखो हम कहां खड़े हैं। हम उसी जगह खड़े हैं जहां पर खड़े थे, जहां से कोई रास्ता आगे बढ़ने का है ही नहीं। हम एक-दूसरे की टोपी उछालने में माहिर हैं। अजीजो़ अपनी सोच बदलो! जब तक हम अपनी सोच नहीं बदलेंगे जब तक समाज का कोई भला होने वाला नहीं है। समाज में बदलाव लाने के लिए संगठित होना जरूरी है। आज हमारे समाज के पास एक जांबाज़ सिपहसालार जनाब अनीस मंसूरी सदर आल इण्डिया जमीयतुल मंसूर सोसाइटी, लखनऊ मौजूद है उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में समाज की तरक्की के कई रास्ते खुल रहे हैं। हम जब तक किसी एक लीडर को अपना नहीं मानेंगे हम कामयाब नहीं हो सकते। किसी भी सियासी पार्टी में हमारी पहचान नहीं हो सकती। हम ताकतवर तभी बन सकते हैं जब समाज अपने तमाम टाईटिलों को छोड़कर एक नाम और एक झंडे का इस्तेमाल करेगा। आज हर समाज संगठित है व उसका एक लीडर है, जो उसकी हर बात को सरकार तक भेजता है, क्या मंसूरी समाज का कोई लीडर है? जो अपनी बात सरकार तक भेज रहा है, नहीं! इस लिए हमें अनीस मंसूरी को अपना लीडर मानना होगा जो हमारी सुने और सरकार को सुनाये।

मेरे भाईयों, हम अपनी ताकत सरकार को दिखाये और बतायें कि हम सरकार बनवाने वाले नहीं सरकार बनाने वाले हैं। फिर देखिये इस जादुई करिशमें से हमारी बिरादरी कहां पहुँचती है। हम सब को पुरानी रस्मोरिवाज से आजाद होना होगा और अपने नेता की आवाज़ पर लब्बैक कहना होगा। हम सब मिलकर अल्लाह से दुआ करें कि हमें एक और नेक होने की तौफीक अता करे। आमीन!

नाम छोटे लिखें

ताकि कबीले की पहचान के साथ आपको भी पुकारा जा सके।

जैसे- नबी मंसूरी, अशरफ मंसूरी, आफताब मंसूरी, अनीस मंसूरी व मंसूरी जमाल

आसिम फुटवियर

इवास और केनवास के होलसेलर

पानी की टंकी रोड,

जलालाबाद, शाहजहाँपुर

Mo.: 9935186383

64 प्रो. मंसूरी आबिद भाई

मंसूरी फ्रूट कम्पनी

मो0 शाहिद, मो0 जावेद

प्रो0 मो0 शब्बीर

फल एवं सब्जी के कमीशन एजेन्ट

नई सब्जी मण्डी, ललितपुर (उ0प्र0) 284403

6 फोन - 05176-272858 (दु0) 277658 (म0)

मंसूरी ताज भाई Mo.: 9415126039

ताज आलू कम्पनी

कमीशन एजेन्ट एवं आर्डर सप्लायर

आलू, प्याज, लहसुन, शकरकन्दी, आलू बीज के प्रमुख आढ़ती

448, ओ0 ब्लाक, सब्जी मण्डी, किदवई नगर, कानपुर

सम्बन्धित फर्म : गुजरात ओनियन कम्पनी, गुजरात

61 गोल्डन आलू कम्पनी, जाधववाडी, औरंगाबाद

All India Muslim Marriage Bureau

रिश्तों की जानकारी कैसे करें

सबसे पहले आप अपने रिश्ते का बायोडाटा और एक फोटो ऑल इण्डिया मुस्लिम मैरिज ब्योरो, S.S.E./47, सेक्टर-C, सीतापुर रोड योजना, सबौली, कुर्सी रोड, लखनऊ'' को भेजें। V.I.P., V.V.I.P., सभी तरह के रिश्तों की रजिस्ट्रेशन फीस 200 रूपये + 100 रू0 फोन, डाक खर्च, विज्ञापन वगेरह। रिश्ता तय हो जाने के बाद मैरिज ब्यूरो की माली मदद करनी होगी।

सभी मुस्लिम बिरादरियों के लिए शादी लायक लड़के और लड़कियां

S.No.	Cod No.	Sex	बिरादरी	जिला	प्रांत	कद	उम्र	तालीम	कारोबार
1.	2500	M	मंसूरी	महोबा	उ.प्र.	5.7"	28		S.I. रेलवे झांसी
2.	2501	"	मंसूरी	कानपुर	उ.प्र.	5.4"	25		लेदर तिजारत
3.	2503	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.6"	26		प्राईवेट सर्विस लखनऊ
4.	2505	"	मंसूरी	रामपुर	उ.प्र.	5.8"	30	एम.बी.ए.	सर्विस
5.	2506	"	मंसूरी	कानपुर	उ.प्र.	5.4"	26	कम्प्यूटर इंजी0, चेन्नई	
6.	2508	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.6"	26	बी.ए.एल.एल.बी., लखनऊ	
7.	2510	"	मंसूरी	आजमगढ़	उ.प्र.	5.4"	26		कम्प्यूटर कारोबार
8.	2511	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.7"	25	एम.बी.ए., दिल्ली	
9.	2515	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.5"	26	ग्रेजुएट	घरेलू तिजारत
10.	2516	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.6"	27	एम.सी.ए.,	कम्प्यूटर ट्रेनर
11.	2517	"	मंसूरी	गाजियाबाद	उ.प्र.	5.7"	35		इलैक्ट्रानिक कारोबार
12.	2519	"	मंसूरी	इलाहाबाद	उ.प्र.	5.8"	28	बी.यू.एम.एस.	निजी प्रेक्टिस
13.	2521	"	मंसूरी	फरूखाबाद	उ.प्र.	5.4"	40		राज मिस्त्री
14.	2525	"	मंसूरी	इटावा	उ.प्र.	5.5"	39		प्राईवेट जॉब, दिल्ली
15.	2526	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.6"	25	एम.बी.ए.	
16.	2499	"	मंसूरी	कानपुर	उ.प्र.	5.7"	25	M.B.A.	
17.	2497	"	मंसूरी	देहरादून	उत्चल.	5.8"	27		सरकारी मुलाजिम
18.	2495	"	मंसूरी	हरदोई	उ.प्र.	5.8"	25	ग्रेजुएट	ट्रांसपोर्ट
19.	2492	"	मंसूरी	डोरांडा	रांची	5.10"	26	होटल मेनेजमेन्ट	सर्विस
20.	2488	"	मंसूरी	नेनीताल	उत्चल.	5.8"	35	एम.ए.	तिजारत
21.	2487	"	मंसूरी	बस्ती	उ.प्र.	5.5"	28	एम.बी.ए.	तिजारत
22.	2485	"	मंसूरी	हरदोई	उ.प्र.	5.4"	28	एम.बी.ए.	टीचर
23.	2484	"	मंसूरी	शाहजहांपुर	उ.प्र.	5.3"	25	हाईस्कूल	सरकारी मुलाजिम
24.	2482	"	मंसूरी	शाहजहांपुर	उ.प्र.	5.4"	24	इण्टर	निजी तिजारत
25.	2480	"	मंसूरी	ग्वालियर	म.प्र.	5.10"	30	एल.एल.बी. प्रेक्टिस	
26.	2478	"	मंसूरी	अम्बाला	पंजाब	5.11"	28	एम.टेक	रेलवे इंजीनियर
27.	2472	"	मंसूरी	अलीगढ़	उ.प्र.	5.11"	30	इंजीनियर (अबूधाबी, दुबई)	
28.	2470	"	मंसूरी	इलाहाबाद	उ.प्र.	5.5"	35	एम. फार्मा, एम.बी.ए.	बैंगलौर
29.	2467	"	मंसूरी	बम्बई	महारा.	5.6"	25	एम.ए.	(अर्टीफीशियल ज्वैलरी)

Scanned with OKEN Scanner

30.	2466	"	मंसूरी	दिल्ली		5.6"	26	होटल मैनेजमेन्ट	सर्विस
31.	2465	"	मंसूरी	बैंगलूर	कर्नाटक	5.7"	28	एम.सी.ए.	
32.	2463	"	मंसूरी	अलीगढ़	उ.प्र.	5.6"	25	एम.बी.ए.	कारोबार
33.	2462	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.6"	24	बी.डी.एस.	(क्लीनिक, उन्नाव)
34.	2460	"	मंसूरी	देहरादून	उत्तरां.	5.7"	28	बी.ई.	सर्विस
35.	2455	"	मंसूरी	टीकमगढ़	उ.प्र.	5.6"	28	एम.ए.	तिजारत
36.	2450	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.6"	28		(सर्विस, सऊदिया)
37.	2448	"	मंसूरी	हमीरपुर	उ.प्र.	5.11"	25	सर्विस	(जेल पुलिस)
38.	2446	"	मंसूरी	बांदा	उ.प्र.	5.6"	22	डी.वी.पी.	(पशु चि0)
39.	2445	"	मंसूरी	ग्वालियर	म.प्र.	6.1"	28	एम.बी.ए.	मार्केटिंग
40.	2443	"	मंसूरी	धार	म.प्र.	5.5"	28	बी.एच.एम.एस.	(डाक्टर)
41.	2440	"	मंसूरी	झांसी	उ.प्र.	5.6"	25	बी.एस.सी.	(कम्प्यूटर)
42.	2436	"	मंसूरी	हमीरपुर	उ.प्र.	5.6"	22	हाईस्कूल	बैट्री कारोबार
43.	2435	"	मंसूरी	कानपुर	उ.प्र.	5.9"	24	बी.कॉम.	कारोबार
44.	345	"	कुरेशी	लखनऊ	उ.प्र.	6.0"	38	मेडिकल तिजारत	
45.	352	"	शेख	लखनऊ	उ.प्र.	6.1"	28	बी.टेक. (M.C.S.E., C.C.N.A.)	
46.	188	"	पठान	लखनऊ	उ.प्र.	5.6"	28	इण्टर (सऊदिया में)	
47.	373	"	अंसारी	बनारस	उ.प्र.	5.4"	28	ग्रेजुएट	
48.	362	"	इदरीसी	लखनऊ	उ.प्र.	5.4"	25	हाफिज़, क़ारी, कामिल (टेलरिंग शॉप)	
49.	360	"	खांन	गोण्डा	उ.प्र.	5.10"	45		तिजारत
50.	356	"	शेख	गोण्डा	उ.प्र.	5.9"	28	बी.ए.	सर्विस प्राईवेट
51.	350	"	पठान	लखनऊ	उ.प्र.	5.3"	21		प्राईवेट जॉब
52.	2007	F	मंसूरी	रायबरेली	उ.प्र.	5.3"	24	एम.एस.सी. ज्योलॉजी	
53.	2010	"	मंसूरी	झांसी	उ.प्र.	5.3"	23	एम.ए. आई.आई.टी. शार्टहैण्ड	
54.	2011	"	मंसूरी	कानपुर	उ.प्र.	5.1"	20	हाईस्कूल	
55.	2015	"	मंसूरी	गोरखपुर	उ.प्र.	5.4"	24	एम.ए. मेडिकल	
56.	2017	"	मंसूरी	हमीरपुर	उ.प्र.	5.3"	23	बी.एस.सी., एम.बी.ए.	
57.	2020	"	मंसूरी	आजमगढ़	उ.प्र.	5.2"	20	बी.एस.सी.	
58.	2021	"	मंसूरी	कानपुर	उ.प्र.	5.3"	23	बी.डी.एस.	
59.	2025	"	मंसूरी	सीतापुर	उ.प्र.	5.2"	25	एम.ए. इंगलिश	
60.	2027	"	मंसूरी	गोरखपुर	उ.प्र.	5.4"	25	एम.ए. उर्दू	
61.	2028	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.3"	26	एम.सी.ए.	
62.	2030	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.3"	22	एम.ए. इंगलिश	
63.	2031	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.3"	24	एम.ए., फॅशन कोर्स	
64.	2033	"	मंसूरी	महोबा	उ.प्र.	5.3"	26	बी.ए., ब्यूटीशियन	
65.	2035	"	मंसूरी	लखनऊ	उ.प्र.	5.4"	26	बी.ए. कम्प्यूटर	
66.	2036	"	मंसूरी	शिवपुरी	म.प्र.	5.3"	22	बी.इ.ए. भोपाल	
67.	2038	"	मंसूरी	गाजियाबाद	उ.प्र.	5.2"	29	एम.ए. ब्यूटीशियन	

Scanned with OKEN Scanner

बरेली कैन्ट विधायक आली जनाब विरेंद्र सिंह, सदर को झण्डा दिखाकर काफिला रवाना किया

सहानपुर (बिजनौर) से धामपुर मंसूरी समाज के सम्मेलन मे जाते हुए हज़रात को नीली झण्डी दिखाकर रवाना करते विधायक शीश राम जी

मिलक (रामपुर) जाते हुए रास्ते में सदर का इस्तकबाल

Scanned with OKEN Scanner

पूर्व केन्द्रीय मंत्री नटवर सिंह ने भी बहुजन समाज पार्टी के सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय में अपनी आस्था प्रकट की

जिला रामपुर में मंसूरी समाज के महासम्मेलन में शिरकत करते मेहमानेखुसूसी

Scanned with OKEN Scanner